सांध्य दैनिक

नई दृष्टिबिंदु

सच की शक्ति, जनता की दृष्टि

PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

"प्रशंसा से पिघलना मत, आलोचना से उबलना मत, निस्वार्थ भाव से कर्म कीजिए, क्योंकि इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जाना है!!"

अज्ञात...

वर्ष-01 अंक-159 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, रविवार 28 जून 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य -2 रुपए

दुर्ग के 100 वर्ष पुराने डीईओ कार्यालय भवन का होगा नवनिर्माण, मंत्री गजेन्द्र यादव की पहल

शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने किया निरीक्षण, दिए निर्देश

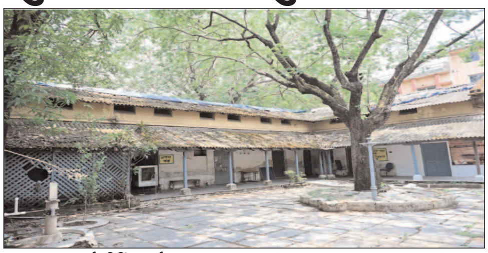

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

दुर्ग जिला मुख्यालय स्थित 1904 में बने 100 वर्ष से अधिक पुराने जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) कार्यालय भवन का शीघ्र ही नवनिर्माण किया जाएगा। लंबे समय से जिले की शिक्षा व्यवस्था के संचालन का केंद्र रहे इस ऐतिहासिक भवन को आधुनिक सुविधाओं से युक्त नए स्वरूप में विकसित किया जाएगा। जर्जर हो चुके वर्तमान भवन के स्थान पर बनने वाला नया कार्यालय शिक्षा प्रशासन को अधिक व्यवस्थित, प्रभावी, पारदर्शी एवं जनसुविधा के अनुरूप बनाएगा।

नवीन भवन में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए बेहतर कार्य वातावरण, अभिलेखों के सुरक्षित संधारण, डिजिटल कार्यप्रणाली तथा शिक्षक, पालक एवं आम नागरिकों के लिए अधिक सुविधाजनक व्यवस्था विकसित की जाएगी। इससे शिक्षा विभाग के प्रशासनिक कार्यों में गति आएगी तथा विभिन्न योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में भी सहायता मिलेगी।

शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने कहा कि जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय केवल एक प्रशासनिक भवन

नहीं, बल्कि जिले की संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का प्रमुख केंद्र होता है। यहीं से विद्यालयों के संचालन, शिक्षकों की व्यवस्थाओं, विद्यार्थियों के हितों, शैक्षणिक गुणवत्ता, नवाचारों तथा शासन की शिक्षा संबंधी योजनाओं का प्रभावी संचालन और अनुश्रवण किया जाता है। इसलिए इस कार्यालय का आधुनिक, सुरक्षित और सुव्यवस्थित होना समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि नया भवन राशि स्वीकृति होने के बाद निर्माण प्रारंभ होगा। आज इंजीनियर के साथ पुराना भवन का निरिक्षण कर जल्द ही ड्राइंग डिजाइन तैयार करने निर्देश दिए। उन्होंने आगे कहा की शिक्षा के क्षेत्र में मजबूत आधारभूत संरचना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की नींव होती है।

विद्यार्थियों को डिजिटल ट्रांससफामेशन के लिए तैयार करें : प्रो.संजय द्विवेदी

नई दृष्टिबिंदु / नई दिल्ली

टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज में शनिवार को 24वें वार्षिक दीक्षांत समारोह का भव्य एवं गरिमामय आयोजन उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के चेयरमैन डॉ. आर. के. गुप्ता * ने की। इस अवसर पर भारतीय जन संचार संस्थान (आईआईएमसी) के पूर्व महानिदेशक और प्रख्यात शिक्षाविद् प्रो. संजय द्विवेदी मुख्य अतिथि के रूप में तथा वरिष्ठ उद्योग विशेषज्ञ श्री संतोष मित्तल विशिष्ट अतिथि के नाते उपस्थित रहे। समारोह में संस्थान के निदेशक डॉ. अजय गुप्ता, डीन डॉ. एम. एन. झा, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य, अभिभावक एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे। इस अवसर पर संस्थान के विभिन्न स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में सफल विद्यार्थियों को उनकी शैक्षणिक उपाधियाँ प्रदान की गईं। साथ ही विभिन्न संकायों में उत्कृष्ट शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को स्वर्ण पदकों से सम्मानित किया गया। उपाधि एवं सम्मान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के चेहरे पर उपलब्धि, आत्मविश्वास और भविष्य के प्रति आशा का विशेष उत्साह स्पष्ट दिखाई दे रहा था। मुख्य अतिथि प्रो. संजय द्विवेदी ने दीक्षांत भाषण में विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि दीक्षांत केवल शिक्षा की समाप्ति नहीं, बल्कि जीवन की नई जिम्मेदारियों का शुभारंभ है। उन्होंने कहा कि आज का युग कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल संचार और तीव्र तकनीकी परिवर्तन का युग है, जिसमें केवल डिग्री प्राप्त करना पर्याप्त नहीं, बल्कि निरंतर सीखना, नवाचार करना और मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहना आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे अपनी शिक्षा, ज्ञान और कौशल का उपयोग समाज, राष्ट्र तथा मानवता के कल्याण के लिए करें तथा अपने पेशेवर जीवन में नैतिकता, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व को सवीच्च प्राथमिकता दें। प्रोफेसर द्विवेदी ने अध्यापकों का आह्वान किया कि वे एआई के समय में अपने विद्यार्थियों को डिजिटल ट्रांससफामेशन के लिए तैयार करें।

विशिष्ट अतिथि संतोष मित्तल ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों को वैश्विक कॉर्पोरेट जगत की बदलती आवश्यकताओं, नेतृत्व क्षमता, नवाचार, टीमवर्क तथा जीवनपर्यंत सीखने की संस्कृति को अपनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि सफलता उन्हीं को प्राप्त होती है जो बदलते परिवेश के अनुरूप स्वयं को निरंतर विकसित करते रहते हैं। समारोह के अध्यक्ष संस्थान के चेयरमैन डॉ. आर. के. गुप्ता ने बताया कि टीआईएएस गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार, उद्योग-अकादमिक सहभागिता तथा विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास के प्रति निरंतर प्रतिबद्ध है। उन्होंने उपाधि प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए विश्वास व्यक्त किया कि वे अपने ज्ञान, प्रतिभा और नैतिक मूल्यों के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

छत्तीसगढ़ में हीरा खनन की तैयारी : बलौदा-बेलमुंडी में लार्ज डायमीटर ड्रिलिंग को हरी झंडी

एनसीएल बोर्ड का फैसला, हीरा भंडार के वैज्ञानिक आकलन से खुलेगा व्यावसायिक खनन का रास्ता

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ में हीरा खनन की संभावनाओं को पंख लग गए हैं। एनएमडीसी-सीएमडीसी लिमिटेड (एनसीएल) के निदेशक मंडल ने महासमुंद जिले के बलौदा-बेलमुंडी डायमंड ब्लॉक में लार्ज डायमीटर ड्रिलिंग शुरू करने को मंजूरी दे दी है। नई दिल्ली में हुई बोर्ड बैठक में यह अहम फैसला लिया गया।

हीरा भंडार का होगा सटीक आकलन

बड़े व्यास की ड्रिलिंग से किम्बरलाइट पाइप में मौजूद हीरा भंडार का वैज्ञानिक आकलन होगा। इसके बाद विस्तृत व्यवहार्यता रिपोर्ट तैयार की जाएगी, जिसके आधार पर व्यावसायिक हीरा खदान विकसित करने का अंतिम निर्णय लिया जाएगा। बोर्ड ने प्रॉस्पेक्टिंग लाइसेंस की अवधि में सभी तकनीकी कार्य समयबद्ध पूरे करने के निर्देश दिए हैं।

पांच प्राकृतिक हीरे मिल चुके हैं

एनसीएल ने स्ट्रीम सेडिमेंट सैंपलिंग, भू-भौतिकीय सर्वेक्षण और लक्षित ड्रिलिंग से किम्बरलाइट पाइप की पहचान की थी। करीब 200 टन बल्क सैंपल का परीक्षण एनएमडीसी के पन्ना डायमंड प्रोसेसिंग प्लांट में किया गया, जहां 1.22 कैरेट के पांच प्राकृतिक हीरे मिले। इससे क्षेत्र में हीरा युक्त भू-संरचना की पुष्टि हो चुकी है।

बैठक में ये रहे शामिल

बैठक में अमिताभ मुखर्जी, आशीष चटर्जी, छत्तीसगढ़ खनिज विकास निगम के अध्यक्ष सौरभ सिंह, खनिज विभाग के सचिव पी. दयानंद, सीएमडीसी के एमडी रजत बंसल, उपेंद्र कुमार व विनय कुमार मौजूद रहे।

देश के लिए अहम परियोजना

बोत्सवाना, दक्षिण अफ्रीका, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के अनुभव बताते हैं कि

प्रारंभिक सफलता बड़े व्यावसायिक भंडार का संकेत हो सकती है। इसलिए बलौदा-बेलमुंडी परियोजना को देश के लिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

लौह अयस्क परियोजनाओं की भी समीक्षा

बैठक में बैलाडीला डिपॉजिट-4 में इस वित्त वर्ष 10 लाख टन उत्पादन का लक्ष्य रखा गया, जिसे 70 लाख टन प्रतिवर्ष तक बढ़ाया जाएगा। बैलाडीला डिपॉजिट-13 को एक करोड़ टन वार्षिक क्षमता के साथ विकसित किया जा रहा है। सीएमडीसी अध्यक्ष सौरभ सिंह ने कहा कि बलौदा-बेलमुंडी हीरा परियोजना छत्तीसगढ़ को प्रमुख हीरा उत्पादक राज्य बनाने में ऐतिहासिक साबित हो सकती है।

सभी परियोजनाओं में पर्यावरण संरक्षण, वैज्ञानिक खनन और स्थानीय समुदायों के विकास को प्राथमिकता दी जाएगी।

एनसीएल, एनएमडीसी लिमिटेड (51%) और छत्तीसगढ़ मिनरल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (49%) का संयुक्त उपक्रम है।

सांध्य दैनिक 'नई दृष्टिबिंदु' से जुड़े प्रखर वक्ता राजीव चौबे

पाठकों को मिलेगा समसामयिक विषयों पर राष्ट्रवादी चिंतन

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

सांध्य दैनिक नई दृष्टिबिंदु ने अपने पाठकों के साथ एक खुशखबरी साझा की है। प्रखर वक्ता, राष्ट्रवादी विचारक और राष्ट्रीय चेतना न्यूज के संस्थापक राजीव चौबे अब नई दृष्टिबिंदु परिवार का हिस्सा बन गए हैं। आज से राजीव चौबे बतौर लेखक अपनी लेखनी से समसामयिक और ज्वलंत विषयों पर पाठकों को अपने विचारों से अवगत कराएंगे।

प्रकाशक संपादक आलोक तिवारी ने राजीव चौबे का आभार व्यक्त करते हुए बताया कि नई दृष्टिबिंदु अपने पाठकों को सवीच्च विचारों और निष्पक्षता के साथ पठन सामग्री प्रस्तुत करने के लिए वचनबद्ध है। उन्होंने कहा कि राजीव चौबे के जुड़ने से अखबार की वैचारिक मजबूती और बढ़ेगी। उल्लेखनीय है कि सांध्य दैनिक नई दृष्टिबिंदु में पहले से ही देश-प्रदेश के प्रख्यात लेखक नियमित रूप से लिख रहे हैं। इनमें प्रो. संजय द्विवेदी का साप्ताहिक कॉलम संजय उवाच शनिवार को, वरिष्ठ पत्रकार याज्ञवल्क्य मिश्रा का ह्सोलह दूनी आठ सोमवार को, प्रख्यात लेखिका डॉ. सोनाली चक्रवर्ती का मुद्दे की बात गुरुवार को और साप्ताहिक जलसा मंगलवार को प्रकाशित होता है। इसके अलावा भिलाई टाइम्स के फाउंडर और वरिष्ठ पत्रकार यशवंत साहू का साप्ताहिक कॉलम अंदर की बात खुलकर रविवार को पाठकों तक पहुंचता है। इन स्तंभकारों के अतिरिक्त प्रदेश के ख्यातिलब्ध वरिष्ठ पत्रकार दिवाकर मुक्तिबोध और डीएन शर्मा, आर्य समाज के अजय आर्य के लेख भी नई दृष्टिबिंदु में नियमित रूप से प्रकाशित होते हैं। अब राजीव चौबे के जुड़ने से अखबार का लेखक परिवार और समृद्ध हो गया है। प्रबंधन ने भरोसा दिलाया है कि पाठकों को आगे भी निष्पक्ष, तथ्यपरक और वैचारिक रूप से संपन्न सामग्री मिलती रहेगी।

शांति भंग करने वाले युवक को किया गिरफ्तार

राजनांदगांव। पुलिस अधीक्षक सुश्री अंकिता शर्मा के निर्देशन में चलाए जा रहे शांति व्यवस्था अभियान के तहत थाना लालबाग पुलिस ने शांति भंग करने वाले एक व्यक्ति के खिलाफ प्रतिबंधात्मक कारर्वाई की है।

पुलिस के अनुसार आरोपी सोनू यादव पिता नोहर यादव, उम्र 23 वर्ष, निवासी जैतखाम के सामने बस्ती फरहद, थाना लालबाग, जिला राजनांदगांव द्वारा गांव-मोहल्ले में लोगों से वाद-विवाद कर शांति भंग की जा रही थी। संज्ञेय अपराध घटित होने की आशंका को देखते हुए पुलिस ने आरोपी को धारा 170 बीएनएसएस के तहत गिरफ्तार किया। आरोपी के खिलाफ पृथक से धारा 126, 135(3) बीएनएसएस के तहत कार्रवाई कर इस्तगासा तैयार किया गया और न्यायालय जिला राजनांदगांव में पेश किया गया। यह अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कीर्तन राठौर के मार्गदर्शन एवं नगर पुलिस अधीक्षक श्रीमती वैशाली जैन के पयर्वेक्षण में की गई।

प्रेस से मिलिए कार्यक्रम का आयोजन, कलेक्टर और एसएसपी हुए शामिल

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

न्यू प्रेस क्लब ऑफ भिलाई नगर द्वारा शनिवार को सुपेला स्थित प्रेस क्लब भवन में प्रेस से मिलिए कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिला कलेक्टर अभिजीत सिंह और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल अतिथि के रूप में शामिल हुए। दोनों अधिकारियों ने जिले में अपने अब तक के अनुभव साझा किए और कानून व्यवस्था व प्रशासनिक ढांचे पर खुलकर चर्चा की। पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए कार्यक्रम प्रेस-प्रशासन संवाद का मजबूत मंच साबित हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के तैलचित्र पर दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। प्रेस क्लब अध्यक्ष अनिल गुप्ता व महासचिव दिलीप शर्मा ने कलेक्टर व एसएसपी का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। स्वागत संबोधन में अध्यक्ष अनिल गुप्ता ने क्लब की गतिविधियों की जानकारी दी और क्लब के संधारण के लिए कलेक्टर के समक्ष मांग रखी। महासचिव दिलीप शर्मा ने प्रेस क्लब की सामाजिक, रचनात्मक गतिविधियों, पत्रकार कल्याण योजनाओं और भावी काययीजनाओं से अवगत कराया।

दुर्ग की पुलिसिंग बड़ी चुनौती: एसएसपी

एसएसपी विजय अग्रवाल ने कहा कि दुर्ग जिले में तीन अलग-अलग क्षेत्र हैं। भिलाई टाउनशिप, पटरी पार का क्षेत्र और दुर्ग शहर। इसके अलावा बड़ा देहात क्षेत्र भी है। 25 लाख से अधिक की आबादी के लिए दो हजार से कुछ अधिक का पुलिस बल काम कर रहा है। इतने कम बल के साथ पूरे जिले की कानून व्यवस्था संभालना बड़ी चुनौती है। उन्होंने अपने कायर्काल के कुछ अनुभव भी साझा किए।

कलेक्टर ने सराही पत्रकारों की भूमिका

कलेक्टर अभिजीत सिंह ने मीडिया को लोकतंत्र का मजबूत स्तंभ बताते हुए शहर और जिले के विकास में पत्रकारों की सकारात्मक भूमिका की सराहना की। उन्होंने प्रशासन-मीडिया के बीच बेहतर समन्वय पर जोर दिया। कलेक्टर ने बताया कि 2012 में आईएएस में चयन के बाद केंद्र सरकार के अधीन कार्य किया। दुर्ग कलेक्टर के रूप में कार्य करना सुखद अनुभव रहा। जिले की भौगोलिक स्थिति व मांग के अनुसार प्रशासन चलाना चुनौतीपूर्ण है।

कार्यक्रम के समापन पर प्रेस क्लब की ओर से दोनों अधिकारियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील चौहान, उपाध्यक्ष जय प्रकाश आर्य, रघुनंदन पंडा, सचिव गौकरण निषाद, जोगिंदर सिंह, कार्यालय सचिव मोहन राव, सह सचिव भोपाल देवांगन सहित कायर्कारिणी सदस्य सर्वेश सिंह, पी मोहन, सोनू यादव, योगेश वर्मा व सुरेन्द्र ठाकुर ने अतिथियों का अभिनंदन किया। कार्यक्रम में टी सूर्या राव, अरविंद सिंह, राजेंद्र सोनबोईर, बीडी निजामी, राजेंद्र गोस्वामी, अशोक पंडा, सुधीर सिंह, संदीप उपाध्याय, आर एन रामाराव, रत्नाकर अल्वा, रमेश गुप्ता, कोमल धनेसर, राजेश अग्रवाल, डीके साहू, आनंद ओझा, हरप्रीत भाटिया, रमेश भगत, कमल शर्मा, मोहम्मद फारूक, प्रशांत सरकार सहित बड़ी संख्या में पत्रकार उपस्थित रहे।

विवाह का आधार कुंडली नहीं, समझदारी होना चाहिए : आचार्य डॉ. अजय आर्य

भिलाई में वैदिक सत्संग में युवाओं और परिवारों को दिया संदेश

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

आर्य समाज मंदिर सेक्टर-6 में रविवार को वैदिक सत्संग एवं समसामयिक चर्चा का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में आधुनिक समाज की विसंगतियों, पारिवारिक मूल्यों और वैदिक जीवन-दृष्टि पर चर्चा की गई। मुख्य वक्ता आचार्य डॉ. अजय आर्य ने विवाह, युवा और समाज को लेकर अपने विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान अवनी भूषण पुरंग ने की। संचालन मंत्री प्रवीण गुप्ता ने किया। वैदिक मंत्रोच्चार एवं यज्ञ का संचालन अंकित शर्मा शास्त्री ने किया। इस दौरान सौम्य देशमुख, ऋचा तिवारी एवं समाजसेवी मनोज ठाकरे का स्वागत किया गया।

रिश्तों की बैटरी का रखें ध्यान

आचार्य डॉ. अजय आर्य ने कहा कि आज हर घर में वाई-फाई का नेटवर्क पूरा है, लेकिन परिवार के भीतर संवाद का नेटवर्क कमजोर हो रहा है। उन्होंने कहा कि मोबाइल की बैटरी खत्म होने पर बेचैनी होती है, लेकिन रिश्तों की बैटरी कब खत्म हो जाती है, इसका एहसास भी नहीं होता।

स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि विवाह का आधार जन्मपत्री नहीं, बल्कि गुण, कर्म और स्वभाव होना चाहिए। उन्होंने कहा कि समाज को जाति, उपजाति और दिखावे से ऊपर उठकर व्यक्तित्व, संस्कार और चरित्र को महत्व देना होगा। महाराष्ट्र के सिया एवं केतन, लोहागढ़ प्रकरण का उल्लेख करते हुए कहा कि केवल अरेंज मैरिज कर देना सफल वैवाहिक जीवन की गारंटी नहीं है। विवाह से पहले दो व्यक्तियों के विचार, स्वभाव और जीवन-दृष्टि को समझने का अवसर मिलना चाहिए।

मन मिलाइए, फिर विवाह कराइए

आचार्य डॉ. अजय आर्य ने कहा कि सफल विवाह दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो संस्कारों और दो परिवारों का मिलन होता है। अभिभावकों और युवाओं से कहा कि केवल नौकरी, वेतन, रूप, जाति या कुंडली देखकर निर्णय न लें। यह भी समझें कि दोनों एक-दूसरे के विचारों और जीवन के उद्देश्यों के साथ चल पाएंगे या नहीं।

उन्होंने कहा कि माता-पिता बच्चों की बात सुनें, केवल अपनी बात न सुनाएं। अनुभव का लाभ दें, लेकिन निर्णय न थोपें। बच्चों को बचपन से ही निर्णय लेने और जिम्मेदारी निभाने का अवसर देना चाहिए। उन्हें संघर्ष और आत्मनिर्भरता के लिए तैयार करना ही सच्चा संस्कार है। उन्होंने कहा कि आज शादी का कार्ड चुनने में जितना समय लग जाता है, उतना समय कई परिवार जीवनसाथी को समझने में नहीं लगाते। फोटो सुंदर आ जाती है, लेकिन कई बार भविष्य धुंधला रह जाता है।

युवाओं से सेवा का आह्वान

आचार्य ने युवाओं से समाज सेवा के लिए आगे आने का आह्वान किया। कहा कि जैसा समाज हम बनाएंगे, वैसा ही हमारा भविष्य होगा। इस अवसर पर समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए ऋचा तिवारी का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में नंदलाल आर्य ने भजन प्रस्तुत किया। अंत में पारिवारिक चर्चा आयोजित की गई। उपस्थित समाजसेवियों ने आर्य समाज द्वारा संचालित जलदान महाअभियान तथा भीषण गर्मी एवं नीट परीक्षा के दौरान किए गए सेवा कार्यों की सराहना की।

खास खबर

केंद्रीय जेल दुर्ग में नशा मुक्ति जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

बंदियों को नशे के दुष्परिणामों से अवगत कराकर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के उद्देश्य से गुरुवार को केंद्रीय जेल दुर्ग में नशा मुक्ति जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बंदियों को स्वस्थ, अनुशासित एवं सकारात्मक जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता प्रथम अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश कुटुम्ब न्यायालय दुर्ग श्रीमती हिमांशु जैन ने नशे के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं पारिवारिक दुष्प्रभावों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि नशा व्यक्ति को ही नहीं, पूरे परिवार को बर्बाद कर देता है। श्रीमती जैन ने नशे से मुक्ति के प्रभावी उपाय, काउंसलिंग की भूमिका तथा आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति के महत्व को भी रेखांकित किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में बंदियों ने नशामुक्त जीवन अपनाने और जेल से रिहा होने के बाद समाज में जिम्मेदार नागरिक के

रूप में जीवन व्यतीत करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के दौरान प्रश्नोत्तर सत्र भी आयोजित हुआ, जिसमें बंदियों ने नशा छोड़ने से जुड़ी अपनी जिज्ञासाएं रखीं और विशेषज्ञों से समाधान प्राप्त किया।जेल अधीक्षक मनीष सम्भाकर ने बताया कि बंदियों के सर्वांगीण विकास एवं सफल पुनर्वास के लिए जेल प्रशासन द्वारा समय-समय पर जागरूकता कार्यक्रम, योग, ध्यान, कौशल विकास एवं परामर्श जैसी गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इन प्रयासों का मुख्य उद्देश्य बंदियों में सकारात्मक सोच विकसित करना और उन्हें अपराध एवं नशे से दूर रखते हुए समाज की मुख्यधारा में पुनर्स्थापित करना है।कार्यक्रम में जेल अधीक्षक मनीष सम्भाकर सहित अन्य जेल स्टाफ एवं बड़ी संख्या में बंदी उपस्थित रहे।

शांति भंग करने वाले युवक पर की कार्रवाई

राजनांदगांव। थाना सोमनी पुलिस ने शांति व्यवस्था भंग कर उत्पात मचाने वाले एक असामाजिक तत्व के खिलाफ प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की है। आरोपी को गिरफ्तार कर कायर्पालिक मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किया गया। पुलिस अधीक्षक सुश्री अंकिता शर्मा के निर्देश पर चलाए जा रहे अभियान के तहत शुक्रवार को थाना सोमनी क्षेत्र में यह कार्रवाई की गई। पुलिस को सूचना मिली कि आरोपी टुम्मन यादव उर्फ टुम्मू पिता उमेंद्र यादव, उम्र 37 वर्ष, निवासी बघेरा वार्ड नं. 17, थाना सोमनी द्वारा "मेरे खिलाफ रिपोर्ट लिखाए हो" कहकर लोगों को गाली-गलौज करते हुए उत्पात मचाया जा रहा है। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने आरोपी को समझाने का प्रयास किया। लेकिन वह आक्रोशित होकर गाली-गलौज करते हुए मारपीट पर उतारू हो गया। इसके बाद पुलिस ने आरोपी को धारा 170 बीएनएसएस के तहत गिरफ्तार किया और धारा 126, 135(3) बीएनएसएस के तहत कार्रवाई कर कायर्पालिक मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किया।

भिलाई में भैरव बाबा मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा निकली भव्य शोभायात्रा, जगह-जगह स्वागत

स्वर्गीय बाबूराम व चंदा देवी गहलोत की स्मृति में बना मंदिर

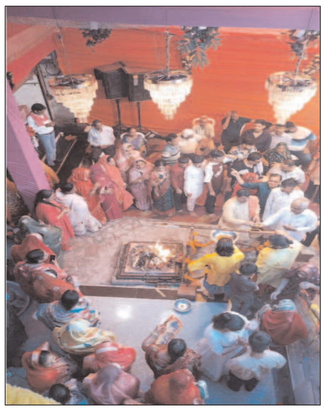

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

लिंक रोड कैम्प-2 भिलाई में स्वर्गीय बाबूराम गहलोत एवं स्वर्गीय चंदा देवी गहलोत की स्मृति में नवनिर्मित भैरव मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा शुक्रवार को विधि विधान से संपन्न हुई। इस अवसर पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा नगर भ्रमण करते हुए वापस मंदिर प्रांगण में समाप्त हुई। प्राण प्रतिष्ठा समारोह का आयोजन 22 जून से शुरू हुआ था। 22 जून को मण्डप निर्माण, वेदी पूजन, अग्नि प्रकट एवं स्थापन, मूर्ति जलाधिवास तथा पुष्पाधिवास का कार्यक्रम हुआ। 23 जून को वेदी पूजन, नित्य हवन, मूर्ति घृताधिवास एवं तैलाधिवास संपन्न हुआ। 24 जून को नित्य पूजन एवं हवन के साथ मूर्ति फलाधिवास कराया गया। 25 जून को नित्य पूजन, हवन और मूर्ति धान्याधिवास का कार्यक्रम हुआ। 26 जून को शोभायात्रा निकाली गई। 27 जून को नित्य पूजन, मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा, हवन एवं पूर्णाहुति के बाद महाआरती और महाभंडारे का आयोजन किया गया।आयोजक ढालचंद गहलोत ने बताया कि बीकानेर से आमंत्रित 11 पंडितों की टीम ने सभी अनुष्ठान विधि विधान से संपन्न कराए। सैकड़ों भक्तों ने हवन में आहुति दी। प्राण प्रतिष्ठा यज्ञाचार्य, ज्योतिषाचार्य पं. आशीष भादाणी और यज्ञ ब्रह्मा योगेश ओझा शास्त्री के सान्निध्य में संपन्न हुई। मंदिर की प्रतिमा भी बीकानेर राजस्थान से लाई गई है। शोभायात्रा में चिन्ना राव, लक्ष्मण गहलोत, रिंकू जैन, सुनील गहलोत, संतोष पति, पूनम गहलोत, हुकुमचंद गहलोत, ढालचंद गहलोत, शिवरतन शर्मा, लकी गहलोत, पूर्व पार्षद सविता राव, वतर्मान पार्षद विनोद, भाजपा के वरिष्ठ नेता त्रिलोचन सिंह सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद थे।

गनियारी में जुआ अड्डे पर पुलिस का छापा, आठ गिरफ्तार

☑ 1.82 लाख नगद समेत 5 .20 लाख की संपत्ति जब्त
पुरानी भिलाई पुलिस और एसीसीयू की संयुक्त कार्रवाई

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

दुर्ग पुलिस की जुआ विरोधी कार्रवाई के तहत पुरानी भिलाई पुलिस और एसीसीयू की संयुक्त टीम ने शुक्रवार रात गनियारी स्थित बड़कू दाऊ के बाड़ा में छापा मारकर जुआ खेलते 8 लोगों को गिरफ्तार किया। आरोपियों के कब्जे और जुआ फड़ से 1,82,670 रुपये नगद, 8 मोबाइल और 3 मोटरसाइकिल जब्त की गईं। जब्त संपत्ति की कुल कीमत 5,20,170 रुपये आंकी गई है।

पुलिस को 27 जून की रात मुखबिर से सूचना मिली थी कि थाना पुरानी भिलाई क्षेत्र के ग्राम गनियारी, भिलाई-3 स्थित बड़कू दाऊ की बाड़ी में बने मकान के अंदर कुछ लोग रुपये-पैसों का दांव लगाकर जुआ खेल रहे हैं। सूचना पर पुरानी भिलाई पुलिस और एसीसीयू की टीम ने घेराबंदी कर दबिश दी। मौके से 8 लोगों को रंगे हाथ पकड़ा गया।

गिरफ्तार आरोपी

पकड़े गए आरोपियों में तुंगत चंद्राकर 35 वर्ष निवासी सिरसा कला, केवल चंद्राकर 29 वर्ष निवासी गुड़ी परछी सिरसा कला, शिवम वर्मा 25 वर्ष निवासी सिरसा कला, प्रवीण देवांगन 24 वर्ष निवासी हनुमान मंदिर के पास सिरसा कला, ताकेश्वर साहू 41 वर्ष निवासी पाटन पुल के पास उतई, चिराग चंद्राकर 25 वर्ष निवासी विश्व बैंक कॉलोनी भिलाई-3, प्रकाश चंद्राकर 41 वर्ष निवासी गायत्री मंदिर के पास सिरसा कला और कुल्लू साहू 23 वर्ष निवासी गांधी चौक उतई शामिल हैं।

जब्त सामग्री

पुलिस ने 1,82,670 रुपये नगद, 8 मोबाइल फोन और 3 मोटरसाइकिल जब्त की हैं। आरोपियों के विरुद्ध अपराध क्रमांक 327/2026 के तहत छत्तीसगढ़ जुआ प्रतिषेध अधिनियम 2022 की धारा 5 के अंतर्गत मामला दर्ज कर जांच की जा रही है। दुर्ग पुलिस ने बताया कि अवैध जुआ, सट्टा और अन्य आपराधिक गतिविधियों के विरुद्ध विशेष अभियान लगातार जारी है। पुलिस ने आम नागरिकों से अपील की है कि ऐसी गतिविधियों से दूर रहें और जानकारी मिलने पर तत्काल पुलिस को सूचित करें। कानून का उल्लंघन करने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

---

29 जून से 6 जुलाई तक मनाया जाएगा सहकारी सप्ताह, प्रदेशभर में होंगे विविध आयोजन

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय के गठन के पाँच वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 29 जून से 06 जुलाई 2026 तक प्रदेश में सहकारी सप्ताह का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान राज्य स्तर पर विभिन्न सहकारी गतिविधियों, सहकारी चिंतन शिविर एवं सहकार मेला का आयोजन किया जाएगा। इस संबंध में शुक्रवार को जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग के बैंक मुख्यालय सभा भवन में आयोजित प्रेस वार्ता में बैंक अध्यक्ष प्रीतपाल बेलचंदन एवं जिला सहकारी केंद्रीय बैंक रायपुर के उपाध्यक्ष अभिनेष कश्यप (बॉबी) ने जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि भारत सरकार के निर्देशानुसार पूरे देश में सहकारिता सप्ताह मनाया जा रहा है। आयोजन की तैयारियों को लेकर 23 जून को सहकारिता मंत्री केदार कश्यप ने विभागीय अधिकारियों की बैठक लेकर दिशा-निर्देश दिए थे। साथ ही प्रदेश की 2058 पैक्स समितियों के प्राधिकृत अधिकारियों से वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से भी संवाद किया गया।

उन्होंने बताया कि सहकारी चिंतन शिविर एवं सहकार मेला 03 एवं 04 जुलाई 2026 को इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित कृषि मंडपम ऑडिटोरियम, लांभाड़ी (रायपुर) में आयोजित होगा। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय मुख्य अतिथि तथा सहकारिता मंत्री केदार कश्यप अध्यक्षता करेंगे। इस आयोजन में पैक्स, दुग्ध, मत्स्य, लघु वनोपज, बुनकर एवं अन्य सहकारी समितियों के साथ नाबार्ड, एनसीडीसी, एनसीसीएफ, नैफेड, सीएससी, इफको, कृभको, राज्य सहकारी संघ सहित विभिन्न संस्थाओं की भागीदारी रहेगी। जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्या. दुर्ग के अंतर्गत दुर्ग, बालोद एवं बेमेतरा जिलों की प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों में ह्यसहकार से समृद्धिह्ल की पहल, उपलब्धियों एवं योगदान को प्रदर्शित किया जाएगा। बैंक से संबद्ध 402 पैक्स समितियों सहित विभिन्न सहकारी संस्थाओं द्वारा सप्ताहभर अनेक गतिविधियां संचालित की जाएंगी। कार्यक्रमों के अंतर्गत सहकारी ध्वजारोहण, सदस्यता अभियान, माइक्रो एटीएम, केसीसी कार्ड एवं रूपे केसीसी वितरण, सहकार दौड़, वृक्षारोपण, मृदा परीक्षण, कृषक संगोष्ठी तथा किसानों की आय बढ़ाने में एफपीओ एवं पैक्स की भूमिका पर परिचर्चा आयोजित की जाएगी।

प्रेस वार्ता में जिला सहकारी केंद्रीय बैंक दुर्ग के उपाध्यक्ष नरेश यदु, मुख्य कायर्पालन अधिकारी एस.के. वर्मा, भाजपा जिला महामंत्री दिलीप साहू, भाजपा जिला अध्यक्ष बेमेतरा अजय साहू, शिव चंद्राकर, रमाकांत द्विवेदी, अजय तिवारी, लखनलाल गुरुपंच, श्यामलाल साहू एवं फत्तेलाल वर्मा सहित अन्य प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

खेत देखने गए किसान की करंट लगने से मौत, बिजली विभाग पर लापरवाही का आरोप

नई दृष्टिबिंदु / अंडा

ग्राम चिंगरी निवासी बीरेन्द्र देशमुख (60 वर्ष) की खेत भ्रमण के दौरान विद्युत करंट की चपेट में आने से ददर्नाक मौत हो गई। घटना के बाद पूरे गांव में शोक की लहर है। मृतक अपने पीछे पत्नी अनुसूइया देशमुख, पुत्र जगेश्वर देशमुख एवं गावेश देशमुख सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। पति की असामयिक मौत से पत्नी का रो-रोकर बुरा हाल है।

घटना के बाद पोस्टमार्टम उपरांत मृतक का शव अंतिम संस्कार के लिए ले जाने के बजाय ग्रामीणों ने अंडा स्थित बिजली कार्यालय के सामने रखकर धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया। लगातार हो रही बारिश के बीच बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर डटे हुए हैं और बिजली विभाग के खिलाफ नारेबाजी कर रहे हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि यह हादसा बिजली विभाग की घोर लापरवाही का परिणाम है। उनका कहना है कि जिस विद्युत पोल के कारण हादसा हुआ, वह काफी समय से टेढ़ा-मेढ़ा और झुका हुआ था। ग्रामीणों ने बताया कि करीब दो वर्ष पूर्व भी विभाग को लिखित आवेदन देकर पोल को सीधा कराने की मांग की गई थी, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की गई।

आरोप है कि पोल झुक जाने के कारण बिजली के तार नीचे आ गए थे। इन्हें अस्थायी रूप से संभालने के लिए एक केबल को लोहे के घेरा तार से बांध दिया गया था। समय के साथ केबल में छेद हो गया, जिससे घेरा तार में विद्युत प्रवाह होने लगा और यही हादसे का कारण बना। ग्रामीणों ने पूरे मामले की तकनीकी जांच कराने तथा दोषी अधिकारियों-कमर्चारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

धरनास्थल पर मौजूद लोगों ने मृतक परिवार को उचित मुआवजा, एक सदस्य को रोजगार तथा जिम्मेदार अधिकारियों पर कठोर कार्रवाई की मांग उठाई है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए पुलिस प्रशासन एवं बिजली विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंच गए हैं और ग्रामीणों से चर्चा कर रहे हैं। समाचार लिखे जाने तक मृतक का अंतिम संस्कार नहीं हो पाया था तथा धरना जारी था। ग्रामीणों का कहना है कि जब तक उनकी मांगों पर ठोस निर्णय नहीं लिया जाता, तब तक आंदोलन जारी रहेगा।

एशियाई खेल टीम से बाहर होने पर मनिका बत्रा ने उठाए सवाल, चयन प्रक्रिया पर मांगी पारदर्शिता

नई दिल्ली

भारतीय टेबल टेनिस की स्टार खिलाड़ी मनिका बत्रा ने 2026 एशियाई खेलों की भारतीय टीम से बाहर किए जाने पर चयन प्रक्रिया को लेकर सवाल उठाए हैं। उन्होंने खेल मंत्री मनसुख मांडविया और भारतीय ओलंपिक एसोसिएशन (आईओए) से मामले की जांच कर चयन प्रक्रिया को पारदर्शी, जवाबदेह और निष्पक्ष बनाए जाने का आग्रह किया है।

भारतीय टेबल टेनिस महासंघ (टीटीएफआई) द्वारा घोषित टीम में पुरुष वर्ग की अगुवाई जी. साथियन और महिला वर्ग की अगुवाई श्रीजा अकुला करेंगी। महिला टीम में श्रीजा अकुला, यशस्विनी घोरपड़े, दीया चितले, सुतीर्था मुखर्जी और सिंड्रेला दास को शामिल किया गया है। मनिका बत्रा को रिजर्व खिलाड़ियों की सूची में रखा गया है।

सोशल मीडिया पर जारी अपने बयान में मनिका ने कहा कि टीम में शामिल नहीं किया जाना उनके लिए निराशाजनक है, लेकिन इससे भी अधिक चिंता का विषय यह है कि चयन मानदंडों को किस प्रकार लागू किया गया। उन्होंने कहा कि उन्हें अब तक यह नहीं बताया गया है कि चयन से बाहर रखने का विशिष्ट कारण क्या था।

मनिका ने कहा कि सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारी के अनुसार चयन प्रक्रिया में विश्व रैंकिंग, राष्ट्रीय रैंकिंग और चयन समिति के विवेकाधिकार को आधार माना जाता है। यदि ऐसा है तो खिलाड़ियों को यह स्पष्ट रूप से बताया जाना चाहिए कि इन सभी कारकों को किस प्रकार और कितने महत्व के साथ लागू किया गया। 31 वर्षीय मनिका ने यह भी उल्लेख किया कि उनकी वर्तमान विश्व रैंकिंग 51 है और वह शीर्ष-50 के बेहद करीब हैं। उनका कहना है कि रैंकिंग में मामूली उतार-चढ़ाव सामान्य बात है और केवल इसी आधार पर उन्हें बाहर रखना समझना कठिन है। मनिका ने अपने अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन का हवाला देते हुए कहा कि इस सत्र में उन्होंने लगातार अच्छा प्रदर्शन किया है और चीन सहित कई मजबूत एशियाई खिलाड़ियों के खिलाफ महत्वपूर्ण जीत दर्ज की हैं। उनके अनुसार, उनका वर्तमान प्रदर्शन उच्च अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बना हुआ है।

उन्होंने यह भी कहा कि घरेलू प्रतियोगिताओं में भागीदारी को चयन का आधार बनाया गया है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लगातार प्रतियोगिताएं खेलने वाले खिलाड़ियों के लिए हर घरेलू टूर्नामेंट में भाग लेना हमेशा संभव नहीं होता।

मनिका ने चयन प्रक्रिया में विवेकाधिकार के इस्तेमाल पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि यदि चयन में किसी स्तर पर विशेष अधिकार का उपयोग किया जाता है, तो उसका तरीका स्पष्ट, समान और दस्तावेजी होना चाहिए। उन्होंने महासंघ से अपने चयन न होने के कारणों, लागू मानदंडों और निर्णय प्रक्रिया का विस्तृत विवरण मांगा है।

न्यूज ब्रीफ

भारतीय टीम को बड़ा झटका, श्रेयंका पाटिल टखने की चोट के कारण महिला टी20 विश्व कप से बाहर

नई दिल्ली। भारतीय महिला क्रिकेट टीम को आईसीसी महिला टी20 विश्व कप 2026 के बीच बड़ा झटका लगा है। टीम की आफ स्पिनर श्रेयंका पाटिल दाएं टखने में चोट के कारण पूरे टूर्नामेंट से बाहर हो गई हैं। उनकी जगह युवा लेग स्पिनर प्रेमा रावत को भारतीय टीम में शामिल किया गया है। श्रेयंका को बुधवार को हेडिंग्ले में नीदरलैंड्स के खिलाफ भारत के दूसरे ग्रुप चरण मुकाबले के दौरान चोट लगी। पावरप्ले के अंतिम ओवर में गेंद रोकने के प्रयास में उनका टखना मुड़ गया, जिसके बाद उन्हें तुरंत मैदान से बाहर ले जाया गया। टूर्नामेंट की तकनीकी समिति ने शुक्रवार को श्रेयंका के स्थान पर 24 वर्षीय प्रेमा रावत को भारतीय टीम में शामिल करने की मंजूरी दे दी है। प्रेमा रावत अभी तक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण नहीं कर सकी हैं, लेकिन घरेलू और महिला प्रीमियर लीग में उनके प्रदर्शन ने चयनकर्ताओं का ध्यान आकर्षित किया है। उन्होंने पिछले दो सत्रों में रायल चैलेंजर्स बेंगलुरु के लिए छह महिला प्रीमियर लीग मैच खेले हैं और तीन विकेट लिए हैं। घरेलू क्रिकेट में भी प्रेमा ने उत्तराखंड को वरिष्ठ महिला चैम्पियनशिप जिताने में अहम भूमिका निभाई थी। उन्हें एक स्वाभाविक आलराउंड खिलाड़ी माना जाता है, जो गेंदबाजी के साथ बल्लेबाजी और क्षेत्ररक्षण में भी योगदान दे सकती है। हालांकि, श्रेयंका का बाहर होना भारत के लिए बड़ा नुकसान माना जा रहा है। उनकी तेज क्षेत्ररक्षण क्षमता के अलावा वह विशेष रूप से बाएं हाथ के बल्लेबाजों और अंतिम ओवरों में भारत की आक्रामक गेंदबाजी रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा थीं। आईसीसी महिला टी20 विश्व कप 2026 की तकनीकी समिति में आईसीसी और मेजबान प्रतिनिधियों की मंजूरी के बाद ही यह बदलाव आधिकारिक रूप से लागू किया गया।

शुरुआती दिनों में तेज गेंदबाजी करते थे कुंबले, मजबूरन अपनानी पड़ी थी लेग स्पिन

मुम्बई। भारतीय क्रिकेट टीम के दिग्गज स्पिनर रहे अनिल कुंबले ने कहा है कि वह अपने करियर के

शुरुआती दिनों में तेज गेंदबाजी करते थे पर जब उनके गेंदबाजी एक्शन पर सवाल उठे तो मजबूरन उन्हें लेग स्पिन अपनानी पड़ी थी। कुंबले का कहना है कि स्कूल और क्लब क्रिकेट खेलते समय वे तेज गेंदबाजी करते थे पर एक एक सीनियर खिलाड़ी ने उनके गेंदबाजी एक्शन पर सवाल उठा दिये थे जिसके बाद उन्हें स्पिन अपनानी पड़ी। कुंबले ने पुराने दिनों को याद करते हुए कहा, क्लब के एक सीनियर खिलाड़ी ने कोच से मुझे गेंदबाजी करने से रोकने के लिए कहा क्योंकि उन्हें लगा कि मैं अपनी कोहनी मोड़ रहा हूं। तब मुझे पता भी नहीं चला कि मैं कोहनी मोड़ रहा हूं। मैं वैसे ही गेंदबाजी कर रहा था जैसा मुझे स्वाभाविक लगता था। उस समय मैं लगभग 13-14 साल का था। इस आरोप के कारण मुझे कर्नाटक अंडर-15 चयन ट्रायल से कुछ सप्ताह पहले ही कोई दूसरा रास्ता निकालना था। ऐसे में उन्होंने अपने भाई से सलाह ली जिन्होंने टीम में चुने जाने की संभावना बढ़ाने के लिए उन्हें लेग स्पिन अपनाने का सुझाव दिया।
कुंबले ने कहा, फिर मुझे अंडर-15 चयन ट्रायल देने का अवसर मिला। इसमें दो माह का समय था।

फीफा वर्ल्ड कप में कनाडा की टीम ऐतिहासिक जीत के बाद कतर के खिलाड़ियों से भिड़ी

वैंकूवर। फीफा विश्वकप फुटबाल में कनाडा ने कतर के खिलाफ मुकाबले में 6-0 की बड़ी जीत हासिल कर एक नया रिकार्ड अपने नाम किया है हालांकि इस जीत के बाद विवाद भी उठ गया। वहां के बीसी प्लेस स्टेडियम में खेले गए इस मैच में कनाडाई टीम ने आसानी से जीत हासिल कर ली। मैच समाप्त होने की घोषणा होते ही दोनों ही टीमों के खिलाड़ियों और स्टाफ के बीच झड़प भी हुई। इस विवाद की शुरुआत तब हुई जब कनाडा के मुख्य कोच जेसी मार्श मैच समाप्त होने के बाद कतर के मैनेजर जूलन लोपेटेगुई से हाथ मिलाने पहुंचे। हालांकि, इस दौरान दोनों के बीच बहस हो गई। इससे कतर के खिलाड़ी भड़क गये और कनाडा के कोच से उलझ गये। इस हल्की नोकझोंक के बाद दोनों टीमों के खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ के बीच विवाद भड़क गया जो धक्का-मुक्की तक पहुंच गया। ऐसे में सुरक्षाकर्मियों ने हस्तक्षेप कर स्थिति को संभालना पड़ा और दोनों टीमों को अलग करना पड़ा। माना जा रहा है कि इस झड़प का कारण कनाडा के मिडफील्डर इस्माइल कोन को लगी चोट है। कनाडाई खिलाड़ी मानते हैं कि कतर के खिलाड़ी असिम मदीबो की टक्कर से कनाडाई खिलाड़ी घायल हुआ। इसी कारण कनाडाई खिलाड़ी काफी गुस्से में थे। दूसरे हाफ की शुरुआत में असिम मदीबो ने इस्माइल कोन पर एक खतरनाक हमला बोला।

फीफा विश्व कप : नाकआउट चरण में पहुंचने वाला पहला देश बना मेक्सिको, दक्षिण कोरिया को 1-0 से हराया

नई दिल्ली

फीफा विश्व कप 2026 में मेजबान मेक्सिको ने शानदार प्रदर्शन करते हुए शुक्रवार को दक्षिण कोरिया को 1-0 से हराकर ग्रुप ए में शीर्ष स्थान हासिल कर लिया और नाकआउट चरण में अपनी जगह पक्की कर ली। मुकाबले का एकमात्र और निर्णायक गोल लुइस रोमो ने दूसरे हाफ में किया।

यह गोल दक्षिण कोरिया के गोलकीपर किम स्युंग-ग्यु की बड़ी गलती के बाद आया। दूसरे हाफ के पांचवें मिनट में मेक्सिको ने बढ़त बनाई, जब एक क्रास को पकड़ने के प्रयास में किम अपने ही साथी खिलाड़ी से टकरा गए और गेंद उनके हाथ से छूट गई। मौके का फायदा उठाते हुए रोमो ने बिना किसी गलती के गेंद को खाली गोलपोस्ट में पहुंचा दिया। गोल खाने के बाद दक्षिण कोरिया ने वापसी की कोशिश की। हालांकि किम ने बाद में शानदार बचाव करते हुए राउल जिमेनेज को दूसरा गोल करने से रोक दिया। मुकाबले के अंतिम क्षणों में दक्षिण कोरिया को बराबरी का मौका मिला, लेकिन मेक्सिको के गोलकीपर राउल रांजेल ने पार्क ह्यून-जुन के प्रयास को शानदार तरीके से रोककर अपनी टीम की जीत सुनिश्चित कर दी। इस जीत के साथ मेक्सिको छह अंकों के साथ ग्रुप ए में शीर्ष पर रहा और अगले दौर में पहुंच गया। अब मेक्सिको अगले मुकाबले में बुधवार को एस्टादियो अज़्टेका में चेकिया का सामना करेगा। वहीं दक्षिण कोरिया, जिसके तीन अंक हैं, अपने अगले मुकाबले में मान्टेरी में दक्षिण अफ्रीका से भिड़ेगा।

फीफा विश्व कप 2026 के बाद जर्मनी टीम को अलविदा कहेंगे मैनुअल नेउर, विश्व कप को बताया अंतिम टूर्नामेंट

विस्टन-सेलम। जर्मनी के अनुभवी गोलकीपर मैनुअल नेउर ने गुरुवार को घोषणा की है कि वह फीफा विश्व कप 2026 के बाद एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय फुटबाल से संन्यास ले लेंगे। 40 वर्षीय नेउर ने स्पष्ट किया कि यह उनके करियर का आखिरी अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट होगा। साल 2014 में जर्मनी को विश्व कप जिताने वाले नेउर लगातार पांचवें विश्व कप में जर्मनी के मुख्य गोलकीपर के रूप में खेल रहे हैं। उन्होंने यूरो 2024 में जर्मनी की क्वार्टर फाइनल हार के बाद राष्ट्रीय टीम से संन्यास ले लिया था, लेकिन क्लब स्तर पर शानदार प्रदर्शन के बाद उन्हें विश्व कप के लिए फिर टीम में शामिल किया गया। नेउर ने एक प्रेस कान्फ्रेंस में कहा, मैंने 2024 में सही कारणों से अंतरराष्ट्रीय फुटबाल छोड़ा था। पिछले दो वर्षों तक लगातार राष्ट्रीय टीम के लिए खेलना मेरे लिए शारीरिक रूप से कठिन होता। अब यह तय है कि यह मेरा आखिरी टूर्नामेंट है। मैं दो साल बाद होने वाली अगली यूरो चैम्पियनशिप में नहीं खेलूंगा। उन्होंने कहा कि हाल के दिनों में उन्होंने यह स्वीकार किया है कि जर्मनी के लिए ये उनके अंतिम मुकाबले होंगे, लेकिन फिलहाल उनका पूरा ध्यान विदाई पर नहीं बल्कि टीम के प्रदर्शन पर है। विश्व कप से पहले गोलकीपर ओलिवर बामन को जर्मनी की पहली पसंद माना जा रहा था, लेकिन नेउर की वापसी के बाद उन्हें शुरुआती स्थान मिला। उन्होंने दो साल बाद राष्ट्रीय टीम के लिए पहला मैच खेलते हुए कुराकाओ के खिलाफ 7-1 की बड़ी जीत में हिस्सा लिया। नेउर ने बताया कि उनकी और बामन की आपसी समझ बहुत अच्छी है और दोनों टीम के हित में साथ काम कर रहे हैं। जर्मनी अब अपने अगले ग्रुप मुकाबले में आइवरी कोस्ट से भिड़ेगा। इस मैच में जीत जर्मनी को नाकआउट चरण में पहुंचा सकती है। जर्मन टीम पिछले दो विश्व कप (2018 और 2022) में ग्रुप चरण से बाहर हो गई थी। नेउर ने कहा, हम पिछली असफलताओं के बारे में नहीं सोच रहे हैं। हमारा लक्ष्य अगला मैच जीतना और जल्दी नाकआउट में जगह बनाना है। उन्होंने यह भी कहा कि इस उम्र में एक और विश्व कप खेलना उनके लिए किसी उपहार से कम नहीं है। साथ ही उन्होंने स्वीकार किया कि अगर उन्हें विश्व कप जीतने की संभावना नहीं दिखती, तो वह यहां मौजूद नहीं होते।

अफगानिस्तान के खिलाफ अंतिम वनडे के लिए भारतीय टीम में हर्षित राणा की वापसी

नई दिल्ली

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने शुक्रवार (19 जून) को पुष्टि की है कि तेज गेंदबाज हर्षित राणा को अफगानिस्तान के खिलाफ तीसरे और अंतिम वनडे मुकाबले के लिए भारतीय टीम में शामिल कर लिया गया है। हर्षित राणा पिछले कुछ समय से बीसीसीआई सेंटर आफ एक्सीलेंस में चोट से उबरने की प्रक्रिया से गुजर रहे थे। अब उन्हें पूरी तरह फिट घोषित कर दिया गया है और वह चेन्नई में भारतीय टीम के साथ जुड़ चुके हैं। भारत और अफगानिस्तान के बीच 20 जून को चेन्नई में तीसरा और आखिरी वनडे खेला जाएगा। 24 वर्षीय हर्षित राणा इस साल टी-20 विश्वकप से पहले अभ्यास मैच के दौरान घुटने की चोट का शिकार हो गए थे, जिसके बाद उन्हें टूर्नामेंट से बाहर होना पड़ा था। उनकी जगह टीम में मोहम्मद सिराज को शामिल किया गया था। चोट के कारण वह इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 में भी हिस्सा नहीं ले सके और कोलकाता नाइट राइडर्स के लिए मैदान पर नहीं उतर पाए। हालांकि लंबे पुनर्वास के बाद राणा को इंग्लैंड और आयरलैंड के खिलाफ टी-20 श्रृंखला के साथ-साथ जापान में होने वाले एशियाई खेलों की संभावित योजनाओं में भी शामिल किया गया था। अब उनकी प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी चेन्नई वनडे से ही हो सकती है, यदि उन्हें अंतिम एकादश में मौका मिलता है। हर्षित राणा ने भारत के लिए अपना आखिरी मुकाबला टी-20 विश्वकप से पहले न्यूजीलैंड के खिलाफ खेला था। न्यूजीलैंड के खिलाफ अंतिम वनडे में उन्होंने तीन विकेट लेने के साथ निचले क्रम में 43 गेंदों पर 52 रन भी बनाए थे। अब तक खेले 14 वनडे मुकाबलों में वह 26 विकेट अपने नाम कर चुके हैं। भारत फिलहाल तीन मैचों की श्रृंखला में 2-0 की अजेय बढ़त बनाए हुए है। टीम ने धर्मशाला और लखनऊ में खेले गए पहले दो मुकाबले जीत लिए थे। श्रृंखला का तीसरा और अंतिम मुकाबला शनिवार (20 जून) को चेन्नई में खेला जाएगा।

अफगानिस्तान के खिलाफ तीसरे वनडे के लिए भारतीय टीम: शुभमन गिल (कप्तान), रोहित शर्मा, श्रेयस अय्यर (उपकप्तान), केएल राहुल (विकेटकीपर), ईशान किशन (विकेटकीपर), नितीश कुमार रेड्डी, वाशिंगटन सुंदर, कुलदीप यादव, अर्शदीप सिंह, प्रसिद्ध कृष्णा, प्रिंस यादव, गुरनूर बराड़, हर्ष दुबे, यशस्वी जायसवाल, हर्षित राणा।

फीफा विश्व कप 2026: स्विट्जरलैंड ने बोस्निया को 4-1 से हराया

इंग्लवुड। फीफा विश्व कप 2026 में स्विट्जरलैंड ने शानदार वापसी करते हुए शुक्रवार तड़के बोस्निया-हर्जेगोविना को 4-1 से हराकर ग्रुप बी में मजबूत स्थिति बना ली। मुकाबले का निर्णायक मोड़ दूसरे हाफ में आया, जब विकल्प खिलाड़ी योहान मंजाबी ने विश्व कप का अपना पहला गोल दागा और इसके बाद स्विट्जरलैंड ने लगातार आक्रामक खेल दिखाते हुए बड़ी जीत दर्ज की। पहले हाफ में स्विट्जरलैंड ने गेंद पर नियंत्रण बनाए रखा, लेकिन बोस्निया की सधी हुई रक्षापंक्ति के सामने उसे सफलता नहीं मिली। दूसरे हाफ में स्विट्जरलैंड ने दबाव बढ़ाया और 74वें मिनट में मंजाबी ने शानदार वाली के जरिए टीम को बढ़त दिलाई। इसके बाद बोस्निया की मुश्किलें तब और बढ़ गईं जब तारिक मुहरेमोविच को खतरनाक टैकल के कारण लाल कार्ड दिखाया गया और टीम 10 खिलाड़ियों तक सीमित हो गई। संख्यात्मक बढ़त का फायदा उठाते हुए स्विट्जरलैंड ने 84वें मिनट में रूबेन वर्गास के गोल से स्कोर 2-0 कर दिया। इसके बाद 90वें मिनट में वर्गास के पास पर मंजाबी ने अपना दूसरा गोल दागा। मैच के इंजरी टाइम में कप्तान ग्रेनिट झाका ने पेनाल्टी को गोल में बदलते हुए स्कोर 4-1 कर दिया। बोस्निया की ओर से एकमात्र गोल एर्मिन माहमिक ने इंजरी टाइम में किया।

अंतिम मिनटों में टूटा भारत का सपना, जर्मनी ने एफआईएच हाकी प्रो लीग में 2-1 से हराया

राटरडैम

भारतीय पुरुष हाकी टीम ने एफआईएच हाकी प्रो लीग 2025-26 के राटरडैम चरण में शुक्रवार को मौजूदा विश्व चैम्पियन जर्मनी के खिलाफ शानदार संघर्ष किया, लेकिन अंतिम क्षणों में मैच हाथ से निकल गया और भारत को 1-2 से हार का सामना करना पड़ा।

भारत के लिए जुगराज सिंह ने अपने 100वें अंतरराष्ट्रीय मुकाबले को यादगार बनाते हुए गोल दागा, लेकिन जर्मनी ने अंतिम चार मिनट में दो गोल कर मुकाबला अपने नाम कर लिया। मुकाबले की शुरुआत में भारतीय टीम ने आक्रामक खेल दिखाया और गेंद पर नियंत्रण बनाए रखते हुए जर्मनी को खुलकर खेलने का मौका नहीं दिया। मजबूत रक्षापंक्ति के कारण विश्व चैम्पियन टीम पहले हाफ में स्पष्ट अवसर नहीं बना सकी। दूसरे क्वार्टर में भारत ने तेज दबाव बनाते हुए जर्मनी को लगातार गलती करने पर मजबूर किया। अभिषेक ने भारत के लिए एक अच्छा मौका बनाया, लेकिन टीम बढ़त हासिल नहीं कर सकी। तीसरे क्वार्टर में भारत को पहला पेनाल्टी कार्नर मिला और जुगराज सिंह ने 38वें मिनट में जोरदार ड्रैग फ्लिक लगाकर भारत को 1-0 की बढ़त दिला दी। यह उनके करियर के 100वें अंतरराष्ट्रीय मैच का खास पल बन गया। जर्मनी ने तीसरे क्वार्टर के अंत में लगातार हमले किए, लेकिन भारतीय गोलकीपर मोहित एचएस ने शानदार बचाव करते हुए बढ़त कायम रखी। अंतिम क्वार्टर में भारत के पास अंतर बढ़ाने के अवसर आए, लेकिन टीम उन्हें गोल में नहीं बदल सकी। इसका फायदा उठाते हुए जर्मनी ने 56वें मिनट में जस्टस वाइगांड के पेनाल्टी कार्नर गोल से बराबरी कर ली। इसके बाद मुकाबले के अंतिम सेकंडों में जर्मनी को एक और पेनाल्टी कार्नर मिला, जिसे याकाब व्हिला ने गोल में बदलते हुए अपनी टीम को 2-1 से जीत दिला दी। हार के बावजूद भारतीय टीम ने पूरे मुकाबले में विश्व चैम्पियन जर्मनी को कड़ी चुनौती दी और अपने खेल से प्रभावित किया। भारत अब 21 जून को भारतीय समयानुसार शाम 5:30 बजे अपने अगले मुकाबले में नीदरलैंड्स का सामना करेगा।

देवेंद्र की घातक गेंदबाजी और कनिष्क की आतिशी पारी से निमाड़ ईगल्स ने जबलपुर को 7 विकेट से हराया

अभिषेक भंडारी की 80 रन की शानदार पारी गई बेकार, 18.3 ओवर में लक्ष्य हासिल कर निमाड़ ईगल्स ने मारी बाजी

इंदौर

होलकर स्टेडियम की दूधिया रोशनी में खेले गए मध्य प्रदेश प्रीमियर लीग के एक रोमांचक मुकाबले में रायल निमाड़ ईगल्स ने जबलपुर रायल लायंस को 7 विकेट से शिकस्त दी। पहले बल्लेबाजी करते हुए जबलपुर ने 176 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा किया था, जिसे ईगल्स ने हिमांशु मंत्री (45), कनिष्क दुबे (नाबाद 70) और कप्तान सारांश जैन (नाबाद 32) की शानदार बल्लेबाजी की बदौलत 18.3 ओवर में ही हासिल कर लिया। देवेंद्र सिंह कथैत (3 विकेट) को उनके घातक गेंदबाजी प्रदर्शन के लिए प्लेयर आफ द मैच चुना गया।

इस जीत के साथ रायल निमाड़ ईगल्स 6 मुकाबलों में 5 जीत और 10 अंकों के साथ तालिका में तीसरे स्थान पर है। वहीं, जबलपुर रायल लायंस 6 मैचों में 4 जीत और 8 अंकों के साथ चौथे पायदान पर है, जिससे उनकी प्लेआफ की उम्मीदें अब भी कायम हैं।

ईगल्स की आक्रामक शुरुआत - 177 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी रायल निमाड़ ईगल्स को शुरुआत से ही आक्रामक अंदाज मिला। पावरप्ले के दौरान टीम ने ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए 68 रन जोड़कर जीत की मजबूत नींव रख दी। हिमांशु संदीप मंत्री (45) और धर्मेश पटेल (23) ने बेहतरीन शुरुआत दी। मैच का रुख तब बदला जब दूसरे विकेट के लिए हिमांशु मंत्री और कनिष्क दुबे के बीच 80 रनों की आक्रामक साझेदारी हुई। इसके बाद, कनिष्क दुबे ने मैदान के चारों ओर शाट्स लगाते हुए 44 गेंदों में नाबाद 70 रन (6 चौके व 3 छक्के) ठोक दिए। अंत में कप्तान सारांश सुबोध जैन ने 20 गेंदों पर नाबाद 32 रन बनाकर चौथे विकेट के लिए नाबाद 56 रनों की साझेदारी निभाई और जीत की औपचारिकता पूरी कर दी।

भंडारी की मेहनत पर फिरा पानी - इससे पहले टास हारकर बल्लेबाजी करने उतरी जबलपुर रायल लायंस के लिए अभिषेक भंडारी ने एक छोर मजबूती से थामे रखा। भंडारी ने 51 गेंदों में 7 चौकों और 4 छक्कों की मदद से नाबाद 80 रन की बेहतरीन पारी खेली। अजय रोहेरा (40) के साथ उनकी साझेदारी की मदद से जबलपुर ने 20 ओवर में 176 रनों का सम्मानजनक स्कोर खड़ा किया। निमाड़ ईगल्स के लिए देवेंद्र सिंह कथैत ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 26 रन देकर 3 महत्वपूर्ण विकेट चटकाए, जिसने जबलपुर की पारी को सीमित रखने में अहम भूमिका निभाई।

संक्षिप्त स्कोर

जबलपुर रायल लायंस : 176/6 (20 ओवर) - अभिषेक भंडारी 80*, अजय रोहेरा 40; देवेंद्र सिंह कथैत 3/26, कुमार कार्तिकेय 2/34।

रायल निमाड़ ईगल्स : 177/3 (18.3 ओवर) - कनिष्क दुबे 70*, हिमांशु मंत्री 45, सारांश जैन 32*; नयनराज मेवाड़ा 2/33।

संपादकीय

गुरु से बंधुआ मजदूर तक : शिक्षक की गरिमा का सवाल

राजीव चौबे (फाउंडर राष्ट्रीय चेतना न्यूज भिलाई)

अट्ठारहवीं शताब्दी के अंत तक दुनिया के अधिकांश हिस्सों में गुलामी प्रथा अपने सबसे वीभत्स रूप में कायम थी। इंसानों की बस्ती में इंसानों की मंडी सजती थी। बच्चों, बूढ़ों, स्त्रियों और पुरुषों की बोली लगती थी। गुलाम खरीदने वाले मालिक पर कोई पाबंदी नहीं थी। वह चाहे तो गुलाम को घर में झाड़ू लगवाए, खेत में हल में जोते, कोल्हू में बैल की जगह बांधे या पाखाना साफ करवाए। काम के बदले पारिश्रमिक का कोई प्रावधान नहीं था। मालिक की दया से दो वक्त का भोजन मिल जाए, यही गुलाम की नियति थी। उन्नीसवीं शताब्दी के चौथे दशक में बदलाव की आहट सुनाई दी। 1833 में ब्रिटिश संसद ने दास प्रथा उन्मूलन अधिनियम पारित किया। इसी अधिनियम की नींव पर 1843 में भारत में विशेष रूप से कानून लागू हुआ। इंसानों की खरीद फरोख्त गैरकानूनी हो गई। लेकिन गुलामी खत्म हुई, शोषण नहीं। जमींदारों ने कृषि मजदूरों को बंधुआ मजदूर बना लिया। फर्क बस इतना था कि अब उन्हें मोल देकर खरीदा नहीं जाता था, पर शोषण बदस्तूर जारी रहा। कर्ज के जाल में फंसाकर पीढ़ियों को बंधक बना लिया जाता था। इस बंधुआ व्यवस्था को तोड़ने के लिए स्वतंत्र भारत ने 1976 में बंधुआ मजदूरी प्रणाली उन्मूलन अधिनियम लागू किया। इस कानून को बने पचास साल हो गए। फिर भी ईंट भट्ठों, निजी खदानों, खेतों से बंधुआ मजदूरों के छूटने की खबरें आज भी आती हैं। लेकिन हमारा विषय ये निजी क्षेत्र के बंधुआ मजदूर नहीं हैं। हमारा विषय है सरकारी बंधुआ मजदूर।

सरकारी तंत्र का बंधुआ मजदूर कौन :चौंकिए मत। दासता उन्मूलन के 183 साल और बंधुआ मजदूरी उन्मूलन के 50 साल बाद भी इस देश में सरकारी तंत्र खुलेआम बंधुआ मजदूरी करवा रहा है। फर्क सिर्फ इतना है कि यहां कोड़े नहीं मारे जाते, नौकरी जाने और जेल जाने का भय दिखाया जाता है। शोले में बसंती कहती है, अरे ये तो बसंती का तांगा है, किसी जमींदार की बेगारी थोड़ी है कि मर्जी न मर्जी करना ही पड़े। पर जब बेगारी सरकार की हो तो इंकार करने की हिम्मत किसमें है?

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊपर माना गया है।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥

इसी देश में आज उसी गुरु को, जिसे सरकारी कागजों में शिक्षक कहा जाता है, संस्थागत बंधुआ मजदूर बना दिया गया है। दुर्भाग्य यह है कि निजी स्कूलों के नहीं, शासकीय स्कूलों के शिक्षक इस बेगारी को ढो रहे हैं।

शिक्षक या ऑल इन वन कर्मचारी

एक शासकीय शिक्षक की नियुक्ति शिक्षा विभाग में बच्चों को पढ़ाने के लिए होती है। पर नियुक्ति पत्र की आड़ में सरकार उससे हर तरह की बेगारी करवाती है।

1. चुनाव ड्यूटीः निर्वाचन आते ही शिक्षक बीएलओ बन जाता है। घर घर जाकर मतदाता सूची में नाम जोड़ता, काटता, संशोधन करता है। चुनाव पर्ची बांटता है। मतदान वाले दिन सुबह 5 बजे से रात तक बूथ पर खड़ा रहता है। फिर मतगणना भी करता है। एसआईआर यानी मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण हो तो महीनों घर घर भटकता है।
2. जनगणना और पशुगणनाः दस साल में एक बार होने वाली जनगणना का पूरा भार शिक्षकों पर है। हर घर का डेटा, हर व्यक्ति की जानकारी जुटानी है। सरकार को इतने से भी तसल्ली नहीं, तो पशुगणना में भैंस, गाय, बकरी तक गिनवाती है।
3. अन्य बेगारः मिड-डे मील का हिसाब, छात्रवृत्ति के फॉर्म, जाति प्रमाणपत्र का सत्यापन, यू-डाइस भरना, शौचालय निर्माण की फोटो खींचना, स्वच्छता पखवाड़ा, पोषण माह, तंबाकू नियंत्रण रैली। सूची खत्म नहीं होती।

पढ़ाने का काम कब करे, यह कोई नहीं पूछता। पर रिजल्ट खराब आए तो नोटिस उसी को मिलता है। नेशनल अचीवमेंट सर्वे में ग्रेड गिरे तो वेतनवृद्धि उसी की रुकेगी। नया फरमानः बायो-मेट्रिक की बेड़ी : छत्तीसगढ़ शासन का ताजा आदेश है कि अब शिक्षकों को ऑनलाइन अटेंडेंस देनी होगी। स्कूलों में बायो-मेट्रिक मशीन लगेगी। विद्या समीक्षा केंद्र के ऐप पर हाजिरी लगेगी। लापरवाही पर पिछले माह के वेतन में कटौती होगी। सवाल यह है कि पटवारी, आरआई, तहसीलदार, एसडीएम, थानेदार, एसपी, कलेक्टर की हाजिरी कौन देखता है? वे जब मर्जी आएं, जब मर्जी जाएं। पर शिक्षक 10:30 बजे एक मिनट लेट हुआ तो वेतन कटा। शिक्षण के अलावा दुनिया भर की बेगारी करने वाले शिक्षक की मानसिक स्थिति, तनाव, कुंठा की परवाह किसे है? और उसी टूटे मनोबल वाले शिक्षक से हम बोर्ड परीक्षा में 100 प्रतिशत रिजल्ट की उम्मीद करते हैं।

भरोसे के रिश्तों के कत्ल से कांपता समाज

ललित गर्ग

पुणे के लोहगढ़ किले की ऊंची पहाड़ी से मंगेतर केतन अग्रवाल को धक्का देकर हत्या करने के आरोप में सिया गोयल की गिरफ्तारी ने पूरे देश को झकझोर दिया है। इससे पहले मेघालय में इंदौर के राजा रघुवंशी की हनीमून के दौरान कथित तौर पर पत्नी सोनम रघुवंशी द्वारा प्रेमी के साथ मिलकर की गई हत्या की घटना ने भी समाज को स्तब्ध किया था। ये घटनाएं केवल अपराध की श्रेणी में रखकर भुला देने योग्य नहीं हैं। ये उन मूल्यों, विश्वासों और रिश्तों की बुनियाद पर गहरा आघात हैं, जिन पर भारतीय समाज सदियों से खड़ा रहा है। भारतीय संस्कृति में विवाह केवल दो व्यक्तियों का संबंध नहीं, बल्कि दो परिवारों, दो संस्कृतियों और दो जीवन-दृष्टियों का मिलन माना गया है। विवाह को सात जन्मों का बंधन कहा गया है। ऐसे में यदि कोई पति, पत्नी, मंगेतर या प्रेमी एक-दूसरे को जीवन का साथी मानने के बजाय बाधा और कांटा समझने लगे, तो यह केवल व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना के संकट का संकेत है।

राजा रघुवंशी और केतन अग्रवाल जैसे मामलों में सबसे अधिक विचलित करने वाला पक्ष यह है कि हत्याएं उन लोगों ने कीं, जिन पर सबसे अधिक विश्वास किया गया था। विश्वास का यह टूटना ही समाज को भयभीत करता है। किसी भी सभ्यता की शक्ति उसकी सैन्य या आर्थिक ताकत नहीं, बल्कि उसके रिश्तों में निहित भरोसा होता है। जब यह भरोसा टूटने लगता है, तब समाज भीतर से कमजोर होने लगता है। यह प्रश्न स्वाभाविक है कि यदि कोई युवती या युवक किसी रिश्ते से संतुष्ट नहीं है, तो क्या उसके सामने ह्यनाह्न कहने का विकल्प नहीं था? आधुनिक समाज ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को पर्याप्त स्थान दिया है। सगाई तोड़ना, विवाह से इनकार करना, आपसी सहमति से अलग होना-ये सभी वैधानिक और सामाजिक विकल्प उपलब्ध हैं। फिर हत्या जैसी भयावह मानसिकता क्यों जन्म ले रही है?

इस प्रश्न का उत्तर केवल कानून या पुलिस के पास नहीं है। इसके लिए समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, धर्माचार्यों और परिवार संस्थाओं को मिलकर मंथन करना होगा। आज का युवा एक ऐसे संक्रमणकाल से गुजर रहा है, जहां पारंपरिक मूल्य और आधुनिक जीवनशैली के बीच गहरा द्वंद्व मौजूद है। एक ओर परिवार की अपेक्षाएं हैं, दूसरी ओर व्यक्तिगत इच्छाएं। संवाद के अभाव में यह द्वंद्व कई बार मानसिक तनाव, विद्रोह और हिंसा का रूप ले लेता है। पिछले कुछ वर्षों में देश ने श्रद्धा वालकर हत्याकांड, निक्की यादव हत्याकांड, बेंगलुरु, दिल्ली और अन्य महानगरों में प्रेम-संबंधों से जुड़े अनेक जघन्य अपराध देखे हैं। इन घटनाओं ने स्पष्ट किया है कि प्रेम, विवाह और संबंधों को लेकर समाज में गहरी अस्थिरता एवं अविश्वास बढ़ रहा है। यह अस्थिरता केवल स्त्री या पुरुष तक सीमित नहीं है, दोनों पक्षों में हिंसक प्रवृत्तियां दिखाई दे रही हैं।

मोबाइल संस्कृति और डिजिटल संसार ने इस संकट को और जटिल बनाया है। मोबाइल फोन, जो कभी दूरियों को समाप्त करने का माध्यम था, आज अनेक मामलों में षडयंत्र, छल और अपराध का साधन बनता जा रहा है। सोशल मीडिया ने तुलना, उपभोगवाद, त्वरित सुख और आभासी संबंधों को बढ़ावा दिया है। डिजिटल दुनिया में बने रिश्ते कई बार वास्तविक जीवन की जिम्मेदारियों और मर्यादाओं से कटे होते हैं। परिणामस्वरूप धैर्य, सहनशीलता और त्याग जैसी पारिवारिक जीवन की आवश्यक विशेषताएं कमजोर पड़ रही हैं। एक अन्य गंभीर पक्ष सांप्रदायिक अविश्वास और तथाकथित ह्यलव जिहादह्न जैसे विवादों के संदर्भ में भी सामने आता है। जब प्रेम, विवाह या संबंधों का उपयोग छल, पहचान छिपाने, धार्मिक परिवर्तन, आर्थिक शोषण अथवा भावनात्मक उत्पीड़न के लिए किया जाता है, तब केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि समुदायों के बीच विश्वास का भी हनन होता है। यह आवश्यक है कि किसी भी प्रकार के संबंध पारदर्शिता, स्वेच्छा, समानता और ईमानदारी पर आधारित हों। पहचान छिपाकर, धोखे से अथवा किसी वैचारिक एजेंडे के तहत बनाए गए संबंध सामाजिक सौहार्द को चोट पहुंचाते हैं।

लेकिन इस विषय पर संतुलित दृष्टिकोण भी आवश्यक है। कुछ घटनाओं के आधार पर किसी सम्पूर्ण समुदाय को दोषी ठहराना न केवल अन्यायपूर्ण है, बल्कि सामाजिक सद्भाव के लिए भी घातक है। भारत की शक्ति उसकी विविधता और सांप्रदायिक सौहार्द में निहित है। सदियों से विभिन्न धर्मों, जातियों और संस्कृतियों के लोग यहां पारस्परिक सम्मान और विश्वास के आधार पर साथ रहते आए हैं। अतः किसी भी अपराध को अपराधी की व्यक्तिगत जिम्मेदारी के रूप में देखना चाहिए, न कि पूरे समुदाय की पहचान के रूप में। हमें प्रेम के नाम पर छल का विरोध करना चाहिए, लेकिन साथ ही सामाजिक सौहार्द और मानवीय एकता को भी अक्षुण्ण रखना होगा। आज सबसे बड़ी चुनौती परिवार संस्था को पुनः सशक्त बनाने की है। संयुक्त परिवारों के विघटन, महानगरीय जीवन, एकाकीपन और अत्यधिक व्यस्तता ने परिवार के भीतर संवाद को कम कर दिया है। माता-पिता और बच्चों के बीच संवादहीनता बढ़ रही है। बच्चों को भौतिक सुविधाएं तो मिल रही हैं, लेकिन भावनात्मक सुरक्षा और मूल्यपरक संस्कार कम होते जा रहे हैं।

विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में केवल रोजगारपरक शिक्षा पर्याप्त नहीं है। वहां जीवन-कौशल, नैतिक शिक्षा, भावनात्मक संतुलन, संबंध प्रबंधन और पारिवारिक मूल्यों पर भी गंभीर कार्य होना चाहिए। युवा पीढ़ी को यह समझाना होगा कि प्रेम का अर्थ अधिकार नहीं-उत्तरदायित्व है, संबंध का अर्थ उपभोग नहीं-समर्पण है और मतभेद का समाधान हिंसा नहीं-संवाद है। धर्म और आध्यात्मिक संस्थाओं की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। सभी धर्म प्रेम, करुणा, सत्य, अहिंसा और सह-अस्तित्व का संदेश देते हैं। यदि धार्मिक संस्थाएं युवा पीढ़ी को मानवीय मूल्यों, आत्मसंयम और संवाद की संस्कृति से जोड़ें, तो अनेक सामाजिक विकृतियों को रोका जा सकता है। आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानंद जैसे चिंतकों ने सदैव चरित्र, नैतिकता और आत्मानुशासन को समाज की आधारशिला माना।

पुणे और मेघालय की घटनाओं ने हमें चेतावनी दी है कि यदि हम अभी नहीं चेते, तो रिश्तों का संकट और गहरा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम परिवार, समाज और राष्ट्र-तीनों स्तरों पर विश्वास की पुनर्स्थापना का अभियान चलाएं। परिवारों में संवाद बढ़े, युवाओं को निर्णय की स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी का बोध कराया जाए, डिजिटल संस्कृति पर संयम हो और सामाजिक-सांप्रदायिक सौहार्द को मजबूत बनाया जाए। सभ्यता की पहचान ऊंची इमारतों, तकनीकी प्रगति और आर्थिक समृद्धि से नहीं होतीय उसकी पहचान इस बात से होती है कि वहां लोग एक-दूसरे पर कितना भरोसा करते हैं। यदि भरोसा टूट गया, तो समाज की आत्मा घायल हो जाएगी। इसलिए आज का सबसे बड़ा राष्ट्रीय दायित्व है-रिश्तों के भरोसे को बचाना, मानवीय संवेदनाओं को पुनर्जीवित करना और प्रेम, विश्वास तथा सौहार्द की उस परंपरा को मजबूत करना, जिसने भारतीय समाज को सदियों से जीवंत बनाए रखा है।

आज भारतीय समाज जिस संक्रमणकाल से गुजर रहा है, उसमें रिश्तों का संकट केवल पति-पत्नी अथवा प्रेम-संबंधों तक सीमित नहीं रह गया है। एक ओर पुणे और मेघालय जैसी घटनाएं भरोसे के रिश्तों की हत्या कर रही हैं, तो दूसरी ओर प्रशासनिक लापरवाही के कारण अस्पतालों, स्कूलों और सार्वजनिक स्थलों पर आगजनी एवं दुर्घटनाओं में मासूमों की मौतें व्यवस्था के प्रति जनता के विश्वास को तोड़ रही हैं। सांप्रदायिक तनाव, धार्मिक कट्टरता, पहचान छिपाकर बनाए जाने वाले संबंध, प्रेम के नाम पर छल और शोषण जैसी घटनाएं भी सामाजिक सौहार्द की नींव को कमजोर कर रही हैं। भौतिकता, उपभोक्तावाद और अंधी प्रतिस्पर्धा की आंधी ने संयम, सादगी, त्याग और पारिवारिक मर्यादाओं जैसे जीवन-मूल्यों को हाशिए पर धकेल दिया है। वहीं नशे का बढ़ता प्रचलन, शराब और मादक पदार्थों की लत युवा पीढ़ी को परिवार और समाज से काटकर हिंसा, अपराध और संवेदनहीनता की ओर ले जा रही है। जब समाज में व्यक्ति अपने स्वार्थ, वासना और तात्कालिक सुख को ही सर्वोच्च मानने लगे, तब रिश्ते साधना नहीं, सौदे बन जाते हैं। ऐसी स्थिति में आवश्यक है कि परिवार, शिक्षा, धर्म, मीडिया और शासन-सभी मिलकर मानवीय मूल्यों, पारदर्शिता, संवाद, नैतिकता और पारस्परिक सम्मान की संस्कृति को पुनर्जीवित करें। क्योंकि यदि मानवीय रिश्तों की बुनियाद ही हिल गई, तो न केवल परिवार टूटेंगे, बल्कि सामाजिक सौहार्द, राष्ट्रीय एकता और सभ्यता का पूरा ढांचा भी संकट में पड़ जाएगा।

कोदो-कुटकी की खेती अपनाएं, पोषण और समृद्धि दोनों पाएं

एलडी मानिकपुरी, सहायक जनसंपर्क अधिकारी, ओमप्रकाश डहरिया, सहायक जनसंपर्क अधिकारी

छत्तीसगढ़ की समृद्ध कृषि परंपरा में कोदो और कुटकी का विशेष महत्व रहा है। सदियों से आदिवासी और ग्रामीण समुदायों के भोजन का अभिन्न हिस्सा रहे ये लघु धान्य आज एक बार फिर किसानों, कृषि वैज्ञानिकों और स्वास्थ्य विशेषज्ञों के बीच चर्चा का विषय बने हुए हैं। बदलती जलवायु परिस्थितियों, पोषण संबंधी चुनौतियों और बेहतर कृषि की आवश्यकता के बीच कोदो-कुटकी जैसी मिलेट फसलें भविष्य की खेती का मजबूत आधार बनकर उभर रही हैं।

कोदो (पास्पलम स्क्रोबिकुलेटम) और कुटकी (पैनिकम सुमाट्रेंस) ऐसी फसलें हैं जिन्हें कम पानी, कम लागत और सीमित संसाधनों में भी सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। यही कारण है कि ये छोटे और सीमांत किसानों के लिए आर्थिक सुरक्षा का माध्यम बन रही हैं। कम उपजाऊ, पथरीली और ढालू भूमि में भी इनकी खेती संभव है, जहां अन्य फसलें अपेक्षित उत्पादन नहीं दे पातीं। ये फसलें प्रायः हर एक प्रकार की भूमि में पैदा की जा सकती है। जिस भूमि में अन्य कोई धान्य फसल उगाना सम्भव नहीं होता वहाँ भी ये फसलें सफलता पूर्वक उगाई जा सकती है। हल्की भूमि में जिसमें पानी का निकास अच्छा हो इनकी खेती के लिए उपयुक्त होती है।

आज जब दुनिया स्वास्थ्यवर्धक भोजन की ओर लौट रही है, तब कोदो और कुटकी का महत्व और बढ़ गया है। कोदो में प्रोटीन, काबीहाइड्रेट, आयरन और कैल्शियम प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जबकि कुटकी फाइबर, प्रोटीन, फास्फोरस तथा अन्य खनिज तत्वों से भरपूर होती है। विशेषज्ञों के अनुसार इनका नियमित सेवन मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा और एनीमिया जैसी समस्याओं के नियंत्रण में सहायक हो सकता है। यही वजह है कि आज इन्हें सुपर फूड के रूप में पहचान मिल रही है।

छत्तीसगढ़ सरकार भी मिलेट फसलों को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। वर्ष 2026 में कोदो का न्यूनतम समर्थन मूल्य 3,200 रुपये प्रति क्विंटल तथा कुटकी का 3,350 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। इससे किसानों को बेहतर मूल्य मिलने के साथ इन फसलों की खेती के प्रति उत्साह बढ़ा है। विभागीय जानकारी के अनुसार खरीफ वर्ष 2025 में प्रदेश में कोदो फसल 39.02 हेक्टेयर और कुटकी फसल 38.03 हेक्टेयर रकबे में लगाए गए थे। वैसे विगत खरीफ वर्ष में प्रति हेक्टेयर कोदो की उत्पादन 550 किलोग्राम तथा कुटकी की उत्पादन 675 किलोग्राम दर्ज की गई है। यानी कोदो की उत्पादन 21.46 टन थी, वहीं 25.67 टन कुटकी का उत्पादन हुआ था।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने भी किसानों से धान के साथ-साथ कोदो, कुटकी और रागी जैसी फसलों की खेती अपनाने व उत्पादन बढ़ाने की अपील की है।

कृषि वैज्ञानिकों का मानना है कि उन्नत तकनीकों को अपनाकर कोदो-कुटकी की उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है। मानसून की शुरुआत के साथ जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक बुवाई, बीजोपचार, कतार पद्धति, संतुलित उर्वरक प्रबंधन तथा समय पर खरपतवार नियंत्रण जैसे उपाय किसानों को बेहतर उत्पादन दिला सकते हैं।

बढ़ती बाजार मांग, मिलेट आधारित उत्पादों का विस्तार और सरकारी प्रोत्साहन योजनाएं इन फसलों के व्यावसायिक महत्व को लगातार बढ़ा रही हैं। एक समय केवल ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों तक सीमित रहने वाली कोदो-कुटकी आज राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपनी पहचान बना रही हैं।

पोषण सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण और किसानों की आर्थिक उन्नति के लिए कोदो और कुटकी अत्यंत महत्वपूर्ण फसलें हैं। आवश्यकता इस बात की है कि किसान आधुनिक तकनीकों के साथ इन पारंपरिक फसलों का उत्पादन बढ़ाएं और उपभोक्ता इन्हें अपने दैनिक भोजन का हिस्सा बनाएं। कोदो-कुटकी केवल अनाज नहीं, बल्कि स्वस्थ समाज, उत्तम कृषि और समृद्ध भविष्य की आधारशिला हैं।

भारत को खनिज संरक्षण और सतत विकास का वैश्विक मॉडल बनने की दिशा में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता

किशन सनमुखदास भावनानी

वैश्विक स्तरपर भारत प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से विश्व के सबसे समृद्ध देशों में से एक रहा है। रेत, मुरुम, गिट्टी, पत्थर, मिट्टी और अन्य गौण खनिजों ने न केवल देश के निर्माण क्षेत्र को गति दी है बल्कि ग्रामीण और शहरी विकास की आधारशिला भी रखी है। किंतु पिछले कुछ दशकों में जिस तीव्र गति से इन संसाधनों का दोहन हुआ है, उसने एक गंभीर राष्ट्रीय संकट को जन्म दिया है। यह संकट केवल अवैध खनन तक सीमित नहीं है, बल्कि पर्यावरणीय विनाश, प्रशासनिक भ्रष्टाचार व राजनीतिक संरक्षण का सबसे बड़ा जीवंत उदाहरण राजस्व हानि और भविष्य की पीढ़ियों के अधिकारों से जुड़ा हुआ प्रश्न बन चुका है।

भारत में खनन गतिविधियों का संचालन मुख्य रूप से खान और खनिज (विकास एवं विनियमन) अधिनियम,1957 (एमएमडीआर एक्ट) के तहत होता है।मेरा सुझाव है कि इसमें प्रशासनिक तंत्र, स्थानीय प्रभावशाली तत्वों,खनन माफिया और राजनीतिक संरक्षण के खिलाफ विशेष कठोर प्रावधान के उल्लेख की आवश्यकता है,क्योंकि अवैध खनन प्राय इन्हीं लोगों के इशारों या सलंग्नता में होता है यानें शासन प्रशासन व इस वर्ग के साथ यह खेला सुचारू रूप से चलता है। यह प्राय सभी लोगों को मालूम है लेकिन सभ मूक रहते हैं। बता दूं क्ि इस कानून के अनुसार गौण खनिजों के नियमन और प्रबंधन की जिम्मेदारी राज्य सरकारों को सौंपी गई है। राज्यों को अधिकार दिए गए कि वे स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार नियम बनाएं,पट्टे जारी करें, रॉयल्टी निर्धारित करें तथा अवैध उत्खनन पर कारर्वाई करें।सिद्धांत रूप से यह व्यवस्था अत्यंत प्रभावी दिखाई देती है,किंतु व्यवहार में अनेक राज्यों में स्थिति चिंताजनक है। कानून मजबूत हैं,नियम पर्याप्त हैं, दिशा निर्देश मौजूद हैं,लेकिन क्रियान्वयन अक्सर कमजोर पड़ जाता है।यही वह स्थान है जहां प्रशासनिक तंत्र, स्थानीय प्रभावशाली तत्वों,खनन माफिया और राजनीतिक संरक्षण के आरोप सामने आते हैं।देश के लगभग हर राज्य में समय-समय पर अवैध रेत खनन,नदी घाटों से चोरी, पहाड़ियों की कटाई और वन क्षेत्रों में अवैध उत्खनन की खबरें सामने आती रही हैं। कई मामलों में स्थानीय नागरिकों, पत्रकारों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और ईमानदार अधिकारियों ने इसका विरोध किया, लेकिन उन्हें दबाव, धमकियों और हिंसा तक का सामना करना पड़ा अभी हाल ही में महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में एक नायब तहसीलदार पर हमला इसी मामले की कड़ी है,यह स्थिति दर्शाती है कि अवैध खनन केवल आर्थिक अपराध नहीं, बल्कि कानून के शासन और लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए भी चुनौती बन चुका है।

साथियों, महाराष्ट्र विधानसभा में गुरुवार 25 जून 2026 को राजस्व मंत्री द्वारा प्रस्तुत जानकारी महाराष्ट्र विधानमंडल के पावसाळी अधिवेशन (मानसून सेशन 2026) के चौथे दिन,विधानसभा में चर्चा के दौरान उन्होंने आधिकारिक घोषणाएं कीं और सीधे विधानसभा से लाइव आकर भी इसकी जानकारी साझा की, राज्य में हो रहे अवैध गौण खनिज उत्खनन को रोकने और अपराधियों पर मकोका/ एमपीडीए जैसी सख्त कारर्वाई के लिए एक स्वतंत्र ह्यटास्क फोर्सह्न का गठन कियाजाएगा इसी व्यापक राष्ट्रीय समस्या की ओर संकेत करती है।सरकार ने स्पष्ट कहा कि अवैध खनन में लिप्त अधिकारियों के विरुद्ध निलंबन और विभागीय जांच की जाएगी। संयुक्त उड़नदस्ते बनाए जाएंगे,ड्रोन तकनीक का उपयोग होगा,अवैध परिवहन करने वाले वाहनों को जब्त किया जाएगा तथा जिलाधिकारियों को व्यापक अधिकार दिए जाएंगे। यह नीति और दृष्टिकोण निश्चित रूप से सराहनीय है। किंतु बड़ा प्रश्न यह है कि क्या इन आदेशों का धरातल पर कठोर और निरंतर क्रियान्वयन हो पाएगा? क्योंकि भारत में समस्या कानूनों की कमी नहीं,बल्कि उनके निष्पक्ष और सटीकता से प्रभावी पालन की है।

साथियों, अवैध खनन का सबसे पहला और सबसे गंभीर प्रभाव पर्यावरण पर पड़ता है। जब नदियों से अनियंत्रित मात्रा में रेत निकाली जाती है, तो नदी की प्राकृतिक संरचना बिगड़ जाती है। नदी का तल गहरा होने लगता है, जलधारण क्षमता प्रभावित होती है और आसपास के भूजल स्तर में गिरावट आने लगती है। परिणामस्वरूप कुएं, हैंडपंप और बोरवेल सूखने लगते हैं। कई क्षेत्रों में किसानों को सिंचाई संकट का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार कुछ लोगों के अल्पकालिक आर्थिक१ लाभ के कारण संपूर्ण क्षेत्र का जल संतुलन बिगड़ जाता है।रेत केवल निर्माण सामग्री नहीं है;यह नदियों केपारिस्थितिकी तंत्र का अभिन्न अंग है। रेत नदी के प्रवाह को नियंत्रित करती है, तटों को स्थिर रखती है तथा अनेक जलीय जीवों के लिए आवास का कार्य करती है। जब इसका अत्यधिक उत्खनन होता है, तो नदी किनारों का कटाव बढ़ जाता है। कई स्थानों पर पुलों की नींव कमजोर हुई है, सड़कें क्षतिग्रस्त हुई हैं और नदी तटों पर बसे गांवों को खतरा उत्पन्न हुआ है। यह समस्या केवल वतर्मान की नहीं, बल्कि आने वाले दशकों तक प्रभाव डालने वाली बहुत गंभीर समस्या है।

साथियों अवैध खनन का दूसरा बड़ा प्रभाव जैव विविधता पर पड़ता है। नदी, पहाड़, वन और मिट्टी केवल खनिजों के भंडार नहीं हैं बल्कि हजारों जीव-जंतुओं और वनस्पतियों का घर हैं। जब बड़े पैमाने पर उत्खनन होता है, तो प्राकृतिक आवास नष्ट हो जाते हैं। पक्षियों के घोंसले,मछलियों के प्रजनन क्षेत्र,वन्यजीवों के आवागमन मार्ग और वनस्पतियों की प्राकृतिक श्रृंखला प्रभावित होती है। पर्यावरण वैज्ञानिक लगातार चेतावनी देते रहे हैं कि यदि यही स्थिति बनी रही तो कई स्थानीय प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर पहुंच सकती हैं।भूमि क्षरण भी अवैध खनन की एक गंभीर समस्या है। जब पहाड़ियों और कृषि भूमि के आसपास बिना वैज्ञानिक अध्ययन के खनन किया जाता है, तो मिट्टी की उर्वरता घटती है। भूमि कटाव बढ़ता है और कई बार खेती योग्य क्षेत्र बंजर बन जाते हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था, जो कृषि पर आधारित है, धीरे-धीरे कमजोर होने लगती है। इसका सीधा प्रभाव किसानों की आय, खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण रोजगार पर पड़ता है।

साथियों, अवैध खनन का संबंध जलवायु परिवर्तन से भी जुड़ता जा रहा है। बड़े पैमाने पर भूमि विनाश, वन कटाई और पारिस्थितिक असंतुलन के कारण कार्बन अवशोषण की प्राकृतिक क्षमता घटती है। नदियों और जल स्रोतों के क्षरण से सूखे और बाढ़ जैसी चरम घटनाओं का खतरा बढ़ता है। आज भारत पहले ही जलवायु परिवर्तन की गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे में अवैध खनन स्थिति को और अधिक जटिल बना सकता है।आर्थिक दृष्टि से भी यह एक राष्ट्रीय नुकसान है।अवैध खनन से सरकार को मिलने वाली रॉयल्टी और कर राजस्व का बड़ा हिस्सा चोरी हो जाता है।जो धन सार्वजनिक विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क और जल परियोजनाओं में लगना चाहिए,वह कुछ लोगों की निजी संपत्ति में परिवर्तित हो जाता है।इस प्रकार अवैध खनन केवल पर्यावरण की चोरी नहीं बल्कि जनता केअधिकारों और सरकारी राजस्व की भी चोरी है।अक्सर देखा गया है कि अवैध खनन का नेटवर्क बहुत संगठित होता है। इसमें स्थानीय स्तर से लेकर बड़े आर्थिक हित जुड़े हो सकते हैं। कई बार रात के अंधेरे में नदी घाटों से रेत निकाली जाती है, नकली दस्तावेजों के माध्यम से परिवहन किया जाता है और बाजार में बेचा जाता है। यदि इस पूरी प्रक्रिया में प्रशासनिक निगरानी कमजोर हो या कुछ अधिकारी जानबूझकर आंखें मूंद लें, तो अवैध कारोबार फलता-फूलता रहता है। यही कारण है कि विशेषज्ञ केवल दंडात्मक कारर्वाई ही नहीं बल्कि जवाबदेही और पारदर्शिता बढ़ाने पर भी सटीकता से जोर देते हैं।

साथियों महाराष्ट्र सरकार द्वारा ड्रोन निगरानी, संयुक्त जांच दल, ऑनलाइन मॉनिटरिंग और जिलाधिकारियों को विशेष अधिकार देने जैसी पहलें इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। आधुनिक तकनीक भ्रष्टाचार और मानव हस्तक्षेप को कम कर सकती है। ड्रोन सर्वेक्षण से वास्तविक उत्खनन क्षेत्र की निगरानी संभव है। जीपीएस आधारित वाहन ट्रैकिंग, ई-परमिट प्रणाली और उपग्रह चित्रों का उपयोग अवैध गतिविधियों को नियंत्रित करने में सहायक हो सकता है। किंतु तकनीक तभी सफल होगी जब उसके साथ राजनीतिक इच्छाशक्ति और प्रशासनिक ईमानदारी भी सटीकता से जुड़ी हो।

साथियों, इस पूरे विषय का सबसे महत्वपूर्ण पहलू अंतरपीढ़ी न्याय अर्थात इंटरजनरेशनल जस्टिस है। पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधन केवल वतर्मान पीढ़ी की संपत्ति नहीं हैं। इन पर आने वाली पीढ़ियों का भी समान अधिकार है। यदि वतर्मान पीढ़ी लालच, भ्रष्टाचार और अल्पकालिक लाभ के कारण प्राकृतिक संसाधनों को समाप्त कर देगी, तो भविष्य की पीढ़ियों के पास क्या बचेगा? उन्हें स्वच्छ नदियां,उपजाऊ भूमि,स्थिर पर्यावरण और पर्याप्त प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध कराना हमारी नैतिक और संवैधानिक जिम्मेदारी है। कल्पना कीजिए कि यदि अगले 20 से 30 वर्षों तक वतर्मान गति से अवैध खनन चलता रहा तो कई नदियां अपने प्राकृतिक स्वरूप को खो सकती हैं।भूजल संकट और गहरा हो सकता है। निर्माण उद्योग के लिए आवश्यक खनिजों की कमी पैदा हो सकती है। पर्यावरणीय आपदाएं बढ़ सकती हैं। किसानों, मछुआरों और ग्रामीण समुदायों की आजीविका प्रभावित हो सकती है। यह केवल एक पर्यावरणीय संकट नहीं बल्कि सामाजिक और आर्थिक संकट भी होगा।

साथियों, समाधान केवल सरकार के पास नहीं है। नागरिक समाज, मीडिया, न्यायपालिका, स्थानीय समुदाय और जनप्रतिनिधियों को भी सक्रिय भूमिका निभानी होगी। प्रत्येक खनन पट्टे की जानकारी सार्वजनिक पोर्टल पर उपलब्ध होनी चाहिए। ग्राम सभाओं को निगरानी में शामिल किया जाना चाहिए। अवैध खनन की सूचना देने वालों को सुरक्षा और प्रोत्साहन मिलना चाहिए। पर्यावरणीय क्षति का वैज्ञानिक मूल्यांकन कर दोषियों से वास्तविक क्षतिपूर्ति वसूली जानी चाहिए।साथ ही विद्यालयों और महाविद्यालयों में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए।वास्तव में अवैध खनन का प्रश्न केवल रेत,मुरुम या पत्थर का प्रश्न नहीं है। यह सुशासन,पर्यावरणीय न्याय,कानून के शासन और राष्ट्र के भविष्य का प्रश्न है। यदि कानूनों का कठोरता से पालन हो, तकनीक का प्रभावी उपयोग हो, दोषियों पर निष्पक्ष कारर्वाई हो और राजनीतिक इच्छाशक्ति दृढ़ हो, तो इस समस्या पर काफी हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है। लेकिन यदि मिलीभगत, भ्रष्टाचार और संरक्षण का चक्र चलता रहा, तो प्राकृतिक संसाधनों की यह लूट आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ऐसे संकट को जन्म दे सकती है जिसकी भरपाई संभव नहीं होगी।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगेकि आज आवश्यकता केवल अवैध खनन रोकने की नहीं, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों के प्रति राष्ट्रीय उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने की है। विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करना ही वास्तविक प्रगति है। अन्यथा अल्पकालिक लाभ के लिए किया गया यह अंधाधुंध दोहन भविष्य में जल, भूमि, जैव विविधता और खनिज संसाधनों के ऐसे संकट को जन्म देगा, जिसकी कीमत आने वाली पीढ़ियों को चुकानी पड़ेगी। यही समय है जब भारत को खनिज संपन्न राष्ट्र से आगे बढ़कर ह्लखनिज संरक्षण और सतत विकास का वैश्विक मॉडलह्व बनने की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे।

डिनर छोड़ने की बजाए खाएं ये 7 चीजें, तेजी से होगा वेट लूज

वजन बढ़ने की परेशानी आजकल लोगों को में आम दिखाई देती है। ऐसे में बहुत से लोग कोई अच्छा डाइट प्लॉन फॉलो करते हैं। मगर कुछ लोग ऐसे भी है जो वजन को कम करने के चक्कर में भोजन करना बंद कर देते हैं। बहुत से लोग रात को डिनर किए बगैर ही सोना ठीक समझते हैं। इससे वजन तो भले की कम हो जाए। मगर शरीर में कमजोरी आना और बीमारियों के लगने के खतरा कई गुणा बढ़ जाता है। ऐसे में अगर आप भी अपने वजन को कम करना चाहती है तो आज हम आपको ऐसी चीजों के बारे में बताते हैं जिसके सेवन से आपको सभी जरूरी तत्व मिलने के साथ कैलोरी की मात्रा कम होने से वजन कम करने में मदद मिलेगी।

सलाद : सलाद में सभी जरूरी विटामिन्स, मिनरल्स होते है। इसे खाने से शरीर में जमा एक्सट्रा चर्बी को कम होने में मदद मिलती है। ये खाने में जल्दी पच जाने से शरीर को भारी नहीं लगता है। आप अपनी मनपसंद सब्जियों के अलावा, ताजे फल, सोयाबीन, अंकुरित अनाज, भीगे या उबले चने, पनीर, टोफू आदि से तैयार कर सेवन कर सकती हैं। इशमें फाइबर अधिक मात्रा में होने से पेट लंबे समय तक भरा रहता है। ऐसे में वेट बढ़ने की परेशानी से छुटकारा मिलता है।

क्विनोआ : इसे आप डिनर में सब्जी या सलाद के साथ मिक्स कर खा सकते हैं। क्विनोआ में विटामिन, प्रोटीन, फाइबर, आयरन आदि पोषक तत्ल उचित मात्रा में होने से शरीर का बीमारियों बचाव रहता है। साथ ही हेल्दी तरीके से वजन कंट्रोल करने में मदद मिलती है।

सूप : रात के समय में 1 कटोरी सूप पीना सेहत के साथ वजन को कंट्रोल में रखने के लिए बेस्ट ऑप्शन है। इसे आप अपनी मनपसंद सब्जियों से तैयार कर सकते हैं। ऐसे में यह टेस्टी होने के साथ हेल्दी भी होगा। इसे बनाने के लिए अपनी फेवरेट सब्जियों और थोड़े पानी को कुकर डालकर 2-3 सीटी बजाए। फिर इसे मिक्सर में डालकर ब्लेंड करें। साथ ही नींबू के रस की कुछ बूंदे,, नमक और काली मिर्च मिक्स करें। आपका सूप बनकर तैयार है। इसे पीने से पेट भी लंबे समय तक भरा रहेगा। यह शरीर को हाइड्रेट के साथ पचाने में भी आसान होता है।

इडली : आप रागी, ओट्स से तैयार इडली का भी सेवन कर सकते हैँ। अगर आप चावल की इडली खाना चाहते हैं तो इसके लिए ब्राउन राइस का इस्ते माल करना बेस्ट रहेगा। साथ ही इसमें अपने मनपसंद सूखे मेवे डालकर इसकी पौष्टिकता बढ़ा सकती है। अगर आप इसे सांभर के साथ खाना चाहती है तो इसके लिए उसमें सब्जियां ज्यादा और तेल व मसालों का इस्ते माल कम करें।

ग्रिल्ड चिकन या फिश : वजन को कंट्रोल में रखने के लिए ग्रिल्ड चिकन या फिश भी फायदेमंद होते हैं। इसमें प्रोटीन की मात्रा अधिक मात्रा में होने से शरीर में इसकी क मी नहीं होती है। साथ ही पचने में देर लगाता है। ऐसे में ओवर इटिंग की परेशानी से राहत मिलती है। इसलिए रात को डिनर में ग्रिल्ड चिकन या फिश का सेवन करना बेहतर ऑप्शन है।

दाल : कम मसालेल और तेल से तैयार दाल का सेवन करने से सेहत के साथ वजन कंट्रोल में रखने में मदद मिलती है। इसके लिए मूंग दाल का सेवन करना काफी फायेदमंद होता है। इसमें वसा की मात्रा कम औ र विटामिन, प्रोटीन, फाइबर आदि तत्व अधिक होने से रोजाना डिनर में 1 कटोरी दाल खाने की सलाह दी जाती है।

> धार्मिक शिक्षा बच्चों को जीवन के उद्देश्य को समझने और विपरीत परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने में हायक होती है बच्चों को अपनी संस्कृति, इतिहास और परंपराओं के बारे में जानने का अवसर मिलता हैधार्मिक शिक्षा देते समय कुछ बातों का ध्यान रखें: कट्टरता से बचें- बच्चों को किसी भी धर्म के प्रति कट्टर बनाने के बजाय, सभी धर्मों का सम्मान करना और मानवता की सीख देना ज्यादा महत्वपूर्ण है ।

बेबी अनायज़ा फ़ातिमा

उर्वी गजेंद्र

बचपन से ही बच्चों को धार्मिक शिक्षा देना उनके नैतिक और चारित्रिक विकास के लिए लाभकारी होता है

इससे बच्चों में अच्छे संस्कार, बड़ों के प्रति सम्मान, दया और इंसानियत की भावना पैदा होती है, जिससे वे जीवन की चुनौतियों का सकारात्मक तरीके से सामना कर पाते हैं?बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के कई महत्वपूर्ण लाभ हैं- नैतिक और चारित्रिक विकास

धर्म और आध्यात्मिकता बच्चों को सच बोलने, बड़ों का आदर करने और सही-गलत का भेद समझने में मदद करते हैं?

सहानुभूति और दया: इससे बच्चों में दूसरों की मदद करने, करुणा और परोपकार की भावना का विकास होता है?

सकारात्मक दृष्टिकोण: धार्मिक शिक्षा बच्चों को जीवन के उद्देश्य को समझने और विपरीत परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने में हायक होती है?

संस्कृति से जुड़ाव: बच्चों को अपनी संस्कृति, इतिहास और परंपराओं के बारे में जानने का अवसर मिलता है

धार्मिक शिक्षा देते समय कुछ बातों का ध्यान रखें: कट्टरता से बचें- बच्चों को किसी भी धर्म के प्रति कट्टर बनाने के बजाय, सभी धर्मों का सम्मान करना और मानवता की सीख देना ज्यादा महत्वपूर्ण है

सरल माध्यम चुनें: उन्हें उपदेश देने के बजाय पौराणिक कहानियों, प्रेरक प्रसंगों और त्योहारों के माध्यम से शिक्षा दें, ताकि वे बोरियत महसूस न करें

स्वयं आदर्श बनें: बच्चे माता-पिता को देखकर सबसे ज्यादा सीखते हैं। इसलिए स्वयं भी अपने धार्मिक और नैतिक मूल्यों का पालन करें?विशेषज्ञों का मानना है कि प्रारंभिक वर्षों में दी गई सही सीख बच्चों के व्यक्तित्व का स्थायी आधार बनती है।

बच्चों को संस्कारी कैसे बनाएं

बच्चा कच्ची मिट्टी की तरह होता है। उसे जैसा आकार देंगे, वैसा ही बन जाएगा। संस्कार कोई एक दिन में नहीं सिखाए जाते, ये रोज की छोटी-छोटी आदतों से आते हैं।

1. खुद उदाहरण बनें

बच्चे सुनते कम हैं, देखते ज्यादा हैं। आप घर में बड़ों से कैसे बात करते हैं, नौकर से कैसा व्यवहार करते हैं, गुस्से में क्या करते हैं - बच्चा वही सीखता है। अगर आप धन्यवाद, माफ करना, नमस्ते बोलते हैं तो वो भी बोलेगा।

2. सुबह-शाम की दिनचर्या

- *सुबह उठकर*- माता-पिता और बड़ों के पैर छूना सिखाएं। 2 मिनट प्रार्थना या गायत्री मंत्र।
- *खाने से पहले*- अन्न को प्रणाम करना और अन्नदाता सुखी भव बोलना।
- *रात को सोने से पहले*- दिनभर की गलती के लिए माफी मांगना और ईश्वर को धन्यवाद।

ये 3 आदतें बच्चे को विनम्र और आभारी बनाती हैं।

3. कहानी और त्यौहार सबसे बड़े शिक्षक*

रामायण, महाभारत, पंचतंत्र की कहानियां सिर्फ मनोरंजन नहीं हैं। हफ्ते में 1 दिन 15 मिनट कोई एक कहानी सुनाएं और पूछें- 卐राम ने क्या अच्छा किया? अगर तुम होते तो क्या करते?卐 दीवाली, होली, रक्षाबंधन पर सिर्फ गिफ्ट न दें। बताएं कि ये त्यौहार क्यों मनाते हैं। बच्चे को पूजा में शामिल करें, दीया लगाने दें।

4. नहीं सुनना सिखाएं

हर जिद पूरी करना संस्कार नहीं बिगाड़ना है। प्यार से नहीं बोलना और उसके पीछे का कारण समझाना जरूरी है। इससे बच्चे में धैर्य और संतोष आता है। जिद पर रोए तो इग्नोर करें, 5 मिनट में खुद चुप हो जाएगा।

5. सेवा और साझा करने की आदत*

- महीने में 1 बार किसी गरीब को खाना खिलाएं या कपड़े दें - बच्चे के हाथ से दिलवाएं।
- घर के छोटे काम- पौधों में पानी देना, अपना बिस्तर समेटना, दादा-दादी को पानी देना।
- अपना खिलौना/चॉकलेट दोस्तों के साथ बांटना।

6. भाषा और संगति पर ध्यान*

गाली, झूठ, और दूसरों की बुराई घर में न हो। टीवी-मोबाइल पर क्या देख रहा है, इसके दोस्त कैसे हैं - इस पर नजर रखें। जैसी संगत, वैसे संस्कार। 8 साल की उम्र तक बच्चा सबसे ज्यादा सीखता है।

याद रखें

संस्कार डांट से नहीं, दुलार और नियम से आते हैं। गलती पर टोकें जरूर, पर सबके सामने बेइज्जत न करें। तारीफ जब करे तो काम की करें - तुमने दादी की मदद की, ये बहुत अच्छा लगा।

कहीं आप भी तो नहीं हो रही यूट्रस कैंसर की शिकार इन संकेतों पर दें ध्यान

महिलाओं से जुड़ी हैल्थ प्रॉब्लम्स में से एक यूट्रस से जुड़ी समस्याएं भी हैं जो आजकल शादीशुदा हो या टीनएज, दोनों को ही सुनने को मिल रही है। 10 में 7 औरतें गर्भाशय से जुड़ी किसी ना किसी प्रॉब्लम से जूझ रही है। भारतीय महिलाओं की तोंद बढ़ने की एक वजह यह भी है।

क्या है गर्भाशय में कैंसर?-गर्भाशय में सूजन व छोटे-छोटे सिस्ट व रसोलियां बननी छोटी उम्र में ही शुरु हो गई है। तो बता दें कि इन तीनों ही प्रॉब्लम का कनैक्शन हमारे लाइफस्टाइल से है। बाहर का फ्राइड अन हैल्दी खाना, फिजिकल एक्टिविटी ना करना और काम का स्ट्रेस, ये सब चीजें गर्भाशय की रसोलियां और सूजन पैदा करती हैं जिससे पीरियड्स प्रॉब्लम शुरू हो जाती हैं यह बांझपन व यूट्रस कैंसर जैसी बीमारी का खतरा बना सकती है, जिसे गर्भाशय फाइब्रॉइड कहते हैं।

जानिए यूट्रस में सूजन पड़ने के कारण-वैसे तो 50-55 साल की उम्र की महिलाओं में सूजन तब आती है जब मेनोपॉज का समय करीब हो जाए यानि पीरियड्स बंद होने वाले हो लेकिन पीसीओएस की समस्या है तो उसे भी सूजन हो सकती है। वहीं अगर 20 से 40 उम्र की लड़कियों की बच्चेदानी में सूजन की वजह

. कब्ज या एसिडिटी हो सकती है।
. फिजिकल एक्टिविटी ना के बराबर होना
. मोटी लड़कियों को
. टाइट कपड़े पहनने वाली
. ज्यादा दवाइयों का सेवन करने वाली
. बाहर का तला व ज्यादा खाने वाली
. जो ज्यादा व्यायाम करती हो उन्हें

अब कैसे पता लगाएं कि यूट्रस में सूजन आ गई है...

. लगातार पेट बढ़ते रहना
. पेट दर्द, गैस तथा कब्ज होना
. पीठ में दर्द रहना
. प्राइवेट पार्ट में खुजली या जलन
. पीरियड्स में तेज दर्द व ठंड लगना
. संबंधों के दौरान दर्द
. बार-बार पेशाब आना
. लूज मोशन, उल्टी

वैसे तो यूट्रस से जुड़ी प्रॉब्लम में डाक्टरी जांच करवाना बहुत जरूरी है लेकिन कुछ घरेलू नुस्खे भी इसमें फायदेमंद साबित हो सकते हैं। नीम के पत्ते-नीम के पत्ते और सोंठ को पानी में उबालकर काढ़ा बनाएं। दिन में 1 बार इसका सेवन करें। इससे सूजन सही होगी। हल्दी वाला दूध-दिन में 2 बार हल्दी वाला दूध पीएं। आप बादाम दूध का काढ़ा बनाकर-मुलेठी पाउडर-चम्मच मुलेठी पाउडर को गर्म पानी में मिलाकर पीएं। अलसी के बीज-1 चम्मच पीसी हुई अलसी के बीजों को दूध में तब तक उबालें जब तक वो आधा न हो जाए। रात में सोने से पहले इसके सेवन करें। लेकिन इन बातों का ध्यान जरूर रखें...

. नियमित अलट्रा साऊंड टेस्ट करवाती रहें। . असुरक्षित यौन संबंध ना बनाए . हैल्दी डाइट खाएं। . ज्यादा एक्सरसाइज ना करें और योग जरूर करें। . पानी ज्यादा पीएं और सर्दियों में गुनगुना पानी पीती रहें। . वायरस और बैक्टीरिया इंफेक्शन से खुद का बचाव करें। . मोटापा बीमारियों का घर है इसलिए अपने वजन कंट्रोल में रखें। वहीं अगर यूट्रस में रसोलियां या सिस्ट बन रहे हैं तो डाक्टरी जांच करवाएं। दवा का कोर्स जरूर पूरा करें लेकिन लाइफस्टाइल को जरूर हैल्दी बनाएं नहीं तो एक बार ठीक होने के बाद दोबारा से यह समस्या शुरु हो जाएगी। आपको हमारा यह पैकेज कैसा लगा बताना ना भूलें।

जंक फूड का स्वाद, सेहत पर पड़ रहा भारी

बर्गर, पिज्जा और नूडल्स सहित अन्य फास्ट फूड का स्वाद, सेहत के लिए खतरा साबित हो रहा है। अग्रणी शोध संस्था सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (सीएसई) की एक ताजा अध्ययन रिपोर्ट में यह बात सामने आयी है। रिपोर्ट के अनुसार बाजार में उपलब्ध लगभग सभी नामी कंपनियों के जंक फूड में नमक और वसा की मात्रा निर्धारित सीमा से खतरनाक स्तर तक ज्यादा पाई गई है। सीएसई की महानिदेशक सुनीता नारायण ने मंगलवार को 'कोड रेड' शीर्षक से प्रकाशित रिपोर्ट के हवाले से बताया कि भारतीय बाजार में उपलब्ध अधिकतर पैकेट बंद खाना और फास्ट फूड में भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) के मानकों से बहुत ज्यादा है।

जानिए क्या सीएसई की रिपोर्ट में नारायण ने संवाददाताओं को बताया कि एफएसएसएआई ने फास्ट फूड कंपनियों को इन उत्पादों में इस्तेमाल किए गए खाद्य पदार्थों का मात्रा पैकेट पर दर्शाने के लिए इस साल जुलाई में दिशानिर्देश तैयार किए थे, लेकिन सरकार ने इन्हें अब तक अधिसूचित कर लागू नहीं किया है। शोध में चिप्स, नूडल्स, पिज्जा, बर्गर और नमकीन सहित अन्य फास्ट फूड के सभी अग्रणी कंपनियों के 33 उत्पादों की प्रयोगशाला जांच में पाया गया कि इनमें नमक और वसा की मात्रा खतरनाक स्तर पर इस्तेमाल की जा रही है। सभी 33 लोकप्रिय जंकफूड में कोई भी उत्पाद निर्धारित मानकों के पालन की कसौटी पर खरा नहीं उतर सका। नारायण ने कहा कि सरकार ने 2013 में इस विषय पर फास्ट फूड कंपनियों के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश बनाने के लिए एफएसएसएआई के विशेषज्ञों की एक समिति गठित की थी। पिछले सात साल में तीन समितियां गठित हो चुकी हैं लेकिन अब तक कोई ठोस कानूनी पहल नहीं हुयी। फास्ट फूड कंपनियों द्वारा निर्धारित मात्रा में इन तत्वों के इस्तेमाल से परहेज होने के कारण के सवाल पर नारायण ने कहा, ''नमक, वसा और शर्करा सहित अन्य तत्वों की मात्रा निर्धारित मानकों का पालन स्वाद पर भारी पड़ता है, इसलिए कंपनियां स्वाद के साथ कोई समझौता करने को तैयार नहीं है। ऐसे में सरकार दुनिया की इन नामी कंपनियों के दबाव में कानून बनाकर एफएसएसएआई के मानकों का पालन करने के लिए (उन्हें) मजबूर करने से बच रही है।'' उन्होंने कहा कि जंक फूड में नमक, शर्करा और वसा सहित अन्य तत्वों की निर्धारित मात्रा के मुताबिक इस्तेमाल की मात्रा का इन उत्पादों के पैकेट पर स्पष्ट उल्लेख करने के लिये कानूनी बाध्यता को तत्काल लागू करने की जरूरत है। नारायण ने कहा कि जनस्वास्थ्य पर कंपनियों का हित भारी नहीं पड़े, इसके लिये फास्ट फूड उत्पादों में नमक, शर्करा और वसा का निर्धारित मात्रा से अधिक इस्तेमाल होने पर तंबाकू उत्पादों की तर्ज पर स्पष्ट चेतावनी (रेड वार्निंग) पैकेट पर दर्ज करने को अनिवार्य बनाया जाए।

गूंथे आटे से जुड़े वास्तु नियम

गलत तरीका घर में फैला देता है नेगेटिविटी

महिलाएं अक्सर रसोईघर में काम करती समय बहुत सी चीजों को एक साथ करना पसंद करती है। ताकि बाद में किसी चीज की कमी न हो। खासतौर पर वर्किंग वुमेन सब्जियों को और आटे के पहले से ही ज्यादा मात्रा में तैयार कर रखती है। इससे उनका समय बच जाने के साथ बार-बार एक ही काम करने की जरूरत नहीं पड़ती है। मगर यहां बात आटा गूंथने की करें तो शास्त्रों के अनुसार, इसे उतनी मात्रा में ही गूंथना चाहिए, जितनी जरूरत है। मगर इसे पहले से ही गूंथ कर रखने से सेहत को नुकसान होने के साथ घर में नेगेटिविटी बढ़ने का खतरा रहता है। तो चलिए जानते हैं इसके बारे में विस्तार से...

आटा गूंथ के रखना माना जाता है अशुभ : अक्सर महिलाएं बार-बार के झंझटों में पड़ने की जगह एक साथ ही काफी आटा गूंथ लेती है। साथ ही उसे फ्रिज में रख कर जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल करती है। मगर शास्त्रों के अनुसार, इस आटे को इस्तेमाल करने से बचना चाहिए। साथ ही एक बार इसे इस्तेमाल करने के बाद बाकी के बचे आटे को फ्रिज में रखना अशुभ माना जाता है। ऐसे में हर सयय जरूरतानुसार ही आटा गूंथ कर इस्तेमाल करना चाहिए।

गूंथा हुआ आटा पिंड का प्रतीक : हिंदू धर्म में पिंड दान करने की परंपरा है। इसमें मरे हुए इंसान के लिए आटे की गोलियां बना कर पानी में बहाई जाती है। ऐसे में वास्तु के अनुसार, घर पर आटा गूंथ के रखना पिंड के बराबर माना जाता है। ऐसे में इस आटे को इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। साथ ही इसे भूल से भी फ्रिज में नहीं रखना चाहिए। शास्त्रों के मुताबिक, इस आटे को पिंड की तरह मानने से यह भूखी आत्माओं की भूख शांत करता है।

घर में नेगेटिविटी बढ़ना: जैसे कि पहले ही बताया गया है कि गूंथे हुए आटे को घर पर रखना और दोबारा इस्ते माल करना अशुभ होता है। इससे घर में नेगेटिविटी बढ़ती है। ऐसे में घर का माहौल अशांत व लड़ाई-झगड़ों वाले रहता है।

सेहत के लिए नुकसान:पहले से गूंथे हुए आटे की रोटियां बनाकर खाने से सेहत पर बुरा असर पड़ता है। ऐसे में पाचन तंत्र खराब होने से कई बीमारियों के लगने का खतरा बढ़ता है। शास्त्रों के मुताबिक भी ऐसे आटे से तैयार रोटी खाना बीमारियों को निमंत्रण देने के बराबर माना जाता है।

मानसिक परेशानियां : ऐसे आटे की रोटी खाने से सेहत को नुकसान होने के साथ व्यक्ति के अंदर आलस भरा रहता है। उसपर नेगेटिविटी बढ़ने के साथ मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसतरह व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रूप से परेशान रहता है। साथ ही बहुत से लोग यह जान ही पाते हैं कि इसके पीछे का कारण पहले से गूंथे हुए आटे की रोटी खाना होता है।

इन पौधों को अपने घर में लगाने से हो जाएंगे मालामाल

हर कोई चाहता है कि उसके घर में अच्छा खासा धन हो। इसके लिए वह प्रयास भी करता है। धन लाभ के लिए शास्त्रों में कई तरह के उपाय बताए गए हैं। इनमें से एक है घर में पौधे लगाना। शास्त्रों में कई ऐसे पौधों के बारे में बताया गया है जिसे घर में लगाने से सौभाग्य की वृद्धि होती है और धन-धान्य का आगमन होता है।

हल्दी का पौधा

घर में हल्दी का पौधा लगाना बहुत शुभ माना जाता है। हल्दी का पौधा लगाने से घर की नकारात्मक ऊर्जा दूर हो जाती है और घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश होता है। यह पौधा घर में सुख समृद्धि लाता है और हर मनोकामना पूरी करने में सहायक होता है।

सदा सुहागन का पौधा

सदा सुहागन की कुल 8 प्रजातियां हैं। इनमें से सात मेडागास्कर में पाई जाती है। 8वीं प्रजाति भारत में पाई जाती है। सदा सुहागन का पौधा घर में लगाने से घर का वातावरण शुद्ध रहता है। इसके अलावा इस पौधे में धन को आकर्षित करने की क्षमता होती है।

मनी प्लांट

मनी प्लांट को घर में लगाना बहुत ही शुभ माना जाता है। इसे घर में लगाने से कभी भी पैसों की कमी नहीं होती। मनी प्लांट घर के मुख्य द्वार पर लगाना शुभ माना जाता है।

शमी का पौधा

शमी का पौधा अपने घर में जरूर लगाएं। शमी का पौधा घर में लगाने से घर में सुख-समृद्धि बढ़ती है। वास्तु के अनुसार, इसे घर के मुख्य द्वार पर लगाना बहुत शुभ होता है।

'इंडियाज गॉट लेटेंट 2' के पहले एपिसोड पर 50 मिलियन व्यूज पार

समय रैना ने अपना ही रिकॉर्ड तोड़ डाला

कॉमेडियन समय रैना ने अभी सिर्फ इस शो का पहला एपिसोड 20 जून को जारी किया था और महज 6 दिन में इस वीडियो पर 50 मिलियन व्यूज आ चुके हैं।कॉमेडियन समय रैना इन दिनों अपने शो 'इंडियाज गॉट लेटेंट 2' के लिए काफी चर्चा में हैं। पहली बार ऐसा हुआ है कि कोई शो नेटफ्लिक्स और यूट्यूब पर एक साथ रिलीज हुआ है, लेकिन इस वजह से नेटफ्लिक्स का नुकसान होता दिखाई दे रहा है। दरअसल, कॉमेडियन ने अभी सिर्फ इस शो का पहला एपिसोड 20 जून को जारी किया था और महज 6 दिन में इस वीडियो पर 50 मिलियन व्यूज आ चुके हैं हैरानी की बात ये है कि ये व्यूज सिर्फ यूट्यूब के है, नेटफ्लिक्स के नहीं। इसके साथ ही समय रैना ने इस शो के पहले सीजन के सभी एपिसोड्स का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया है।'150 इंजेक्शन और मां बनने का लंबा संघर्ष', अनुष्का रंजन ने साझा की ढ्ढङ्कस्न जर्नी की दर्दभरी कहानी'मां-बाप का दोष नहीं', केतन मर्डर केस पर कंगना रनौत ने तोड़ी चुप्पी, किसे बताया जिम्मेदार'इंडियाज गॉट लेटेंट 2' के पहले एपिसोड में बतौर पैनलिस्ट समय रैना, आलिया भट्ट, शरवरी वाघ, आशीष सोलांकी और बलराज घई दिखाई दिए थे। एपिसोड काफी एंटरटेनिंग था, उसमें आने वाले सभी कलाकारों को सोशल मीडिया पर काफी प्यार मिला।अब समय रैना ने इस एपिसोड की व्यूज डिटेल्स अपने इंस्टाग्राम पर साझा की। अपने चैनल के ऐनलिटिक्स का तस्वीर शेयर किया, जिसमें उनके चैनल की टॉप 2 वीडियोज दिख रहे थे। उसमें से एक वीडियो 'इंडियाज गॉट लेटेंट 2% के पहले एपिसोड का था, जिस पर 50 मिलियन व्यूज दिख रहे थे। इस फोटो के साथ समय रैना ने लिखा, '50 मिलियन लेट्स गोज्, ये पहले सीजन के किसी भी एपिसोड के व्यूज से कई ज्यादा है। अगला एपिसोड अगले हफ्ते किसी भी समय पर।'इस तस्वीर में दूसरा वीडियो समय का कमबैक वीडियो था, जिसका नाम स्टिल अलाइव है। कमाल बात ये है कि ये वीडियो अप्रैल में जारी किया गया था, लेकिन इसके व्यूज सिर्फ 45 मिलियन थे। इसमें कोई शक नहीं कि सिर्फ 6 दिनों में 50 मिलियन एक बड़ा रिकॉर्ड है और समय ने अपना ही रिकॉर्ड तोड़ डाला है। बता दें कि ये व्यूअरशिप सिर्फ यूट्यूब की है, इसमें नेटफ्लिक्स का कोई योगदान नहीं है।लेटेंट के शौकीनों को इस बात का काफी इंतजार है कि अगले एपिसोड में बतौर पैनलिस्ट कौन नजर आने वाला है।

मैंगलोर इवेंट में शाहरुख खान ने जीता दिल

बॉलीवुड के सुपरस्टार शाहरुख खान अपने जेंटल और विनम्र अंदाज के लिए हमेशा से ही फैंस के बीच खास पहचान रखते हैं। उनका व्यवहार, फैंस के प्रति सम्मान और बातचीत का तरीका उन्हें बाकी सितारों से अलग बनाता है। यही वजह है कि उनके चाहने वालों की संख्या देश ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी काफी बड़ी है। हाल ही में शाहरुख खान एक इवेंट के सिलसिले में मैंगलोर पहुंचे थे, जहां उनके चाहने वालों की भारी भीड़ मौजूद थी। इस दौरान फैंस उनके साथ तस्वीरें लेने और उनसे मिलने के लिए काफी उत्साहित नजर आए। इसी इवेंट के दौरान एक फीमेल फैन ने मंच पर ही अपने दिल की बात कह दी। उसने कहा कि वह अपने पति से भी ज्यादा शाहरुख खान को प्यार करती है। फैन का यह बयान सुनकर वहां मौजूद लोग भी हैरान रह गए और माहौल कुछ देर के लिए हल्का मजेदार हो गया। हालांकि इस स्थिति में शाहरुख खान ने अपने सामान्य विनम्र अंदाज में प्रतिक्रिया दी। उन्होंने मुस्कुराते हुए फैन की बात को सम्मान के साथ स्वीकार किया और हल्के-फुल्के अंदाज में माहौल को संभाल लिया। उनका यह रिएक्शन एक बार फिर यह साबित करता है कि वे अपने फैंस के साथ हमेशा सहज और सम्मानजनक व्यवहार करते हैं। शाहरुख खान का यही अंदाज उन्हें बाकी सितारों से अलग बनाता है। वे अक्सर इवेंट्स में फैंस से बातचीत करते समय हंसी-मजाक और प्यार भरे अंदाज में जवाब देते हैं, जिससे माहौल और भी खास बन जाता है। सोशल मीडिया पर भी इस घटना का वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें फैंस उनके रिएक्शन की तारीफ कर रहे हैं। कई यूजर्स का कहना है कि शाहरुख का शांत और विनम्र स्वभाव ही उनकी असली पहचान है। कुल मिलाकर, यह घटना एक बार फिर दिखाती है कि शाहरुख खान सिर्फ एक बड़े अभिनेता ही नहीं, बल्कि एक ऐसे इंसान भी हैं जो अपने फैंस के प्यार और भावनाओं को पूरे सम्मान के साथ स्वीकार करते हैं।

इस बार नहीं दिखेगी उदय-मजनू की जोड़ी

'वेलकम' फ्रेंचाइजी की तीसरी फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' 26 जून को सिनेमाघरों में रिलीज हो गई है और दर्शकों से इसे अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है। हालांकि, इस बार फिल्म में फैंस की पसंदीदा जोड़ी उदय शेट्टी और मजनू भाई यानी अनिल कपूर और नाना पाटेकर नजर नहीं आए, जिससे दर्शकों में निराशा देखने को मिली। इसी बीच अब हर किसी की नजर इस सवाल पर है कि क्या यह आइकॉनिक जोड़ी फ्रेंचाइजी की अगली फिल्म 'वेलकम 4' में वापसी करेगी या नहीं। इस पर खुद अभिनेता Akshay Kumar ने बड़ा अपडेट दिया है। अक्षय कुमार ने कहा कि 'वेलकम' सिर्फ एक फिल्म नहीं बल्कि एक परिवार है। उन्होंने कहा कि नाना पाटेकर, अनिल कपूर और पूरी टीम एक परिवार की तरह हैं। अक्षय ने संकेत दिया कि अगर 'वेलकम 4' बनती है, तो पूरी पुरानी टीम की वापसी देखने को मिल सकती है। फिल्म के डायरेक्टर अहमद खान ने भी बताया कि शूटिंग के दौरान अनिल कपूर और नाना पाटेकर लगातार टीम के संपर्क में थे। नाना पाटेकर अक्सर शूटिंग की जानकारी लेते थे और अनिल कपूर ने भी भविष्य में साथ मिलकर बड़ा प्रोजेक्ट करने की बात कही थी। इस बार 'वेलकम टू द जंगल' में उदय शेट्टी और मजनू भाई की जगह उनके भाइयों को दिखाया गया है। फिल्म में 'येड़ा अन्ना' और 'रोमियो' के किरदारों की एंट्री हुई है, जिन्हें सुनील शेट्टी और अरशद वारसी ने निभाया है। फिल्म में अक्षय कुमार के साथ परेश रावल, दिशा पाटनी, रवीना टंडन और लारा दत्ता जैसे कई बड़े कलाकार भी अहम भूमिकाओं में नजर आए हैं। फ्रेंचाइजी के इस नए बदलाव ने जहां एक तरफ दर्शकों की उत्सुकता बढ़ाई है, वहीं पुरानी स्टार जोड़ी की गैरमौजूदगी ने चर्चा भी तेज कर दी है। अब सभी की नजरें 'वेलकम 4' पर टिकी हैं कि क्या इसमें फिर से पुरानी कॉमेडी टीम एक साथ दिखाई देगी या नहीं।

प्रियंका ने अपने करियर और पर्सनल लाइफ को लेकर कई दिलचस्प खुलासे की

बॉलीवुड से लेकर हॉलीवुड तक अपनी एक्टिंग का लोहा मनवा चुकीं ग्लोबल स्टार प्रियंका चोपड़ा जोनस ने हाल ही में अपने करियर और पर्सनल लाइफ को लेकर कई बड़े और दिलचस्प खुलासे किए हैं।बॉलीवुड से लेकर हॉलीवुड तक अपनी एक्टिंग का लोहा मनवा चुकीं ग्लोबल स्टार प्रियंका चोपड़ा जोनस ने हाल ही में अपने करियर और पर्सनल लाइफ को लेकर कई बड़े और दिलचस्प खुलासे किए हैं। फ्रांस में आयोजित कान्स लायंस सम्मेलन में शामिल हुईं प्रियंका ने हॉलीवुड में काम करने के अनुभवों, अपने प्रोडक्शन हाउस और मां बनने के बाद जिंदगी में आए बदलावों पर खुलकर बात की। उन्होंने बेहद बेबाकी से स्वीकार किया कि हॉलीवुड में उनका अब तक का काम, भारतीय सिनेमा में उनके द्वारा किए गए काम के सामने काफी कम और फीका नजर आता है।

बॉलीवुड के सामने क्यों फीका है हॉलीवुड करियर?

प्रियंका चोपड़ा पिछले एक दशक से हॉलीवुड में एक्टिव हैं और कई बड़े इंटरनेशनल प्रोजेक्ट्स का हिस्सा रही हैं, लेकिन उनका मानना है कि अंग्रेजी सिनेमा में उनका सबसे बेहतरीन काम आना अभी बाकी है। उन्होंने अपने दोनों करियर्स की तुलना करते हुए कहा, मैंने अपने हिंदी फिल्मी करियर में सबसे बेहतरीन फिल्ममेकर्स और दिग्गज कलाकारों के साथ काम किया है। वहां मुझे अद्भुत कहानियां सुनाने और अलग-अलग जोनर में अपनी एक्टिंग को परखने का मौका मिला। इसके विपरीत, हॉलीवुड या अंग्रेजी भाषा के सिनेमा में मैंने वास्तव में अभी तक उतना काम नहीं किया है।

याद किया शुरुआती दिनों का संघर्ष

प्रियंका ने अपने शुरुआती दिनों को याद करते हुए बताया कि जब उन्होंने फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखा था, तब बाहरी लोगों के लिए रास्ता इतना आसान नहीं था। उनके माता-पिता डॉक्टर थे और फिल्मी दुनिया से उनका दूर-दूर तक कोई नाता नहीं था, जिसके कारण उन्हें शुरुआत में यह समझने में काफी समय लगा कि इस इंडस्ट्री में आगे कैसे बढ़ना है।

ग्लोबल सिनेमा को लेकर कही ये बात

प्रियंका ने उस दौर की रूढ़िवादी सोच का जिक्र करते हुए कहा, करियर के शुरुआती दिनों में मुझे अक्सर टोका जाता था कि भारतीय सिनेमा कभी भी हॉलीवुड की तरह ग्लोबल नहीं बन पाएगा, क्योंकि हमारी फिल्में अंग्रेजी में नहीं होतीं और हर कोई हिंदी, तेलुगु, मराठी या अन्य भारतीय भाषाओं को नहीं समझता। हालांकि, आज स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्स के आने और कोविड-19 महामारी के बाद दर्शकों के नजरिए ने इस सोच को पूरी तरह बदल दिया है और अब क्षेत्रीय कहानियां भी ग्लोबल हो रही हैं।

प्रोडक्शन हाउस खोलने का मकसद

आज के डिजिटल दौर की तारीफ करते हुए प्रियंका ने कहा कि अब नए कलाकारों और निर्माताओं के लिए इंडस्ट्री की बाधाएं काफी कम हो गई हैं। उन्होंने कम बजट की सफल हॉरर फिल्म ऑब्सेशन का उदाहरण देते हुए कहा कि आज के समय में आपका आइडिया ही आपकी सबसे बड़ी पूंजी है। अगर आपके पास कोई अच्छा आईडिया है, तो आप उसे शूट करके यूट्यूब पर डाल सकते हैं और वह भी एक बड़ी हिट बन सकती है।

'परफेक्ट नहीं, प्रेजेंट पेरेंट्स' बनना चाहते हैं दिव्यांका-विवेक

टीवी के पसंदीदा कपल दिव्यांका त्रिपाठी और विवेक दहिया अपनी प्रोफेशनल लाइफ के साथ-साथ अपनी निजी जिंदगी को लेकर भी अक्सर चर्चा में रहते हैं. दिव्यांका और विवेक हाल ही में पेरेंट्स बने हैं. एक्ट्रेस ने जुड़वा बेटों को जन्म दिया. इस वक्त कपल अपने बच्चों की परवरिश में बिजी है. दोनों ने पेरेंटिंग लेकर अपनी राय रखी है. दिव्यांका और विवेक ने कहा कि उनका मकसद 'परफेक्ट पेरेंट्स' बनना नहीं है, बल्कि 'प्रेजेंट पेरेंट्स' बनना है.यानी वे मानते हैं कि बच्चों के लिए हर समय उनके साथ खड़े रहना, उन्हें समय देना और उनका साथ निभाना सबसे ज्यादा जरूरी है. उनके मुताबिक, माता-पिता का हर काम में परफेक्ट होना जरूरी नहीं, लेकिन बच्चों की जिंदगी में उनकी मौजूदगी और भावनात्मक साथ सबसे ज्यादा मायने रखता है.दिव्यांका ने बताया कि उन्हें लगा था कि दोनों बच्चे एक जैसे होंगे, लेकिन जन्म के पहले दिन से ही दोनों की आदतें और स्वभाव अलग-अलग हैं. उन्होंने कहा, दोनों के रिएक्शन देने का तरीका, अपनी बात जताने का अंदाज और प्यार पाने का तरीका अलग है. सबसे खूबसूरत बात यह है कि हम हर दिन उनकी अलग-अलग पर्सनैलिटी को करीब से देख रहे हैं. हमें समझ आया कि पैरेंट्स बनने का मतलब सिर्फ बच्चों की परवरिश करना नहीं, बल्कि उन्हें समझना और जानना भी है.

घर का माहौल पहले से ज्यादा शांत हो गया

दिव्यांका ने कहा कि लोग सोचते हैं कि जुड़वां बच्चों के आने से घर में बहुत भागदौड़ और शोर होगा, लेकिन उनके साथ ऐसा नहीं हुआ. उन्होंने कहा, हमारे घर में पहले से ज्यादा शांति और सुकून है. मैं और विवेक अब अपना समय पहले से ज्यादा अच्छे तरीके से मैनेज करते हैं. सबसे बड़ा बदलाव घर की सजावट में नहीं, बल्कि हमारी सोच में आया है. अब हर फैसला लेने से पहले यही सोचते हैं कि इसका हमारे बेटों पर क्या असर पड़ेगा.

दिव्यांका ने बताया कि परिवार और दोस्तों से उन्हें पैरेंटिंग को लेकर बहुत सारी सलाह मिल रही हैं. लेकिन उन्होंने सीखा है कि हर बच्चा अलग होता है और हर माता-पिता का सफर भी अलग होता है. उन्होंने कहा, हम अपने बच्चों के साथ-साथ खुद भी हर दिन सीख रहे हैं. हमारी कोशिश परफेक्ट माता-पिता बनने की नहीं है, बल्कि ऐसे माता-पिता बनने की है जो अपने बच्चों के लिए हर वक्त मौजूद रहें.विवेक दहिया ने कहा कि डिलीवरी के समय का एक पल वह कभी नहीं भूल सकते. उन्होंने बताया, जब दिव्यांका को ऑपरेशन थिएटर ले जाया जा रहा था, तब भी उनके चेहरे पर मुस्कान थी ।

अंदर की बात

-:: खुलकर :: -
यशवंत साहू
फाउंडर भिलाई टाइम्स

व्हाइट कॉलर वाले लोहा चोर,..सिरदर्द ज्वेलरी, मंत्री का जुगाड़ और कोरबा कप्तान कौन...?

लोहा चोर कौन... ??, रडार में तो कई हैं
भिलाई-दुर्ग की सियासत में लोहा चोरी ट्रेंड में है। भिलाई स्टील प्लांट के लोहे को चोरी करने का यह पहला मामला नहीं है। पहले से चोरी हुई है। छूटपुट कारर्वाई तो होती रही है। इस बार ट्रेंड में है। वजह साफ है कि, पहली बार इतनी बड़ी कारर्वाई। दूसरी बड़ी बात कि, इन लोहा चोरों को संरक्षण देने वालों में रसूखदार और व्हाइट कॉलर्स का नाम। सुरक्षाकर्मी, बीएसपी अधिकारी से लेकर राजनेता भी शामिल होने की बात सामने आई है। जेल में बंद होने से पहले मास्टरमाइंड संजय सिंह ने उन लोगों के नाम लिए हैं, जिससे नेताओं की नींद उड़ गई है। प्लांट के अंदर चोरों के दफ्तर से लेकर कई लेन-देन की बातें सामने आई है। संजय के साथ दो लड़के भी अरेस्ट हुए। ये किसी मजबूत राजनीति पकड़ वाले ट्रांसपोर्टर का सुपरवाइजर हैं। अब अगला निशाना यही है। लेकिन इसको को बचाने अलग ही लेवल की पॉलिटिक्स हो रही है। इनके फोन डिटेल में कई माननीय से संपर्क की बात सामने आई है।

नेता जी के लिए सिरदर्द न बन जाए ये ज्वेलरी...: दुर्ग शहर के एक बड़े ज्वेलरी हैं। जो इन दिनों माननीय जी के साथ देखे जा रहे हैं। सेंट्रल की ऐसी कोई जांच एजेंसी नहीं, जो इनके प्रतिष्ठान में रेड नहीं की है। कारर्वाई भी हुई। अब इस सराफा कारोबारी को नेतागिरी करनी है या नेताजी का संरक्षण चाहिए... ? कुछ तो चल रहा है, तभी तो फोटोशोटो से लेकर भारी तामझाम दिख रहा है। बहुत कम लोगों को पता होगा कि सोने के साथ-साथ बीएसपी में कॉपर के खेल में भी इनके खिलाफ कारर्वाई हो चुकी है। पिछले साल की बात है जब गृहमंत्री शहर में आए थे, तब अपने घर ले जाने की तैयारी में थे। वो तो भला है पुलिस प्रशासन का, जिन्होंने समय रहते अलर्ट किया और साहब को उनके निवास जाने से रोक दिया। अब फिर से वही बात हो रही है कि कहीं ये वाले नेता जी को भारी न पड़ जाए इनके साथ दौरा और तस्वीर साझा करना।

दिल्ली दरबार में मंत्री जी, लगा रहे जुगाड़...: मंत्रिमंडल में फेरबदल का हल्ला होते ही दो से तीन मंत्री दिल्ली दरबार पहुंच जाते हैं। बिगड़े हुए सेटिंग को ठीक करने। अपने कायर्काल को रि-स्टॉर्ट और अपडेट कराकर लौटते हैं। पता चला है कि इस बार पेटियों की संख्या बढ़ाई गई है, ताकि किसी प्रकार की कमी न हो। दौरा बेहद गोपनीय रखा गया था। खैर, उनके दौरे की गोपनियता भंग हो चुकी है। अब उन्हें लग रहा है कि लौटने के बाद से स्वास्थ्य ठीक हो गया, लेकिन अब भी वही स्थिति है। जो पहले थी। क्योंकि, संगठन ने सबकुछ देख लिया है। मतलब साफ है कि कभी भी, कुछ भी हो सकता है। बस इंतजार करते रहिए।

सौ बीमार ने एक अनार को बीमार कर दिया...: कहावत तो ये है कि एक अनार, सौ बीमार...लेकिन यहां थोड़ा उल्टा हो गया। सौ बीमारों ने एक अनार को भी बीमार कर दिया। बात हो रही है कि एक वरिष्ठ आईपीएस की। जिनकी इमानदारी की कसमें खाते हैं और मिसाल देते हैं। जिन्हें दिल्ली से स्पेशल उसी काम के लिए लाया गया था। प्रदेश के भ्रष्टाचारियों, उल्टी खोपड़ी के नेताओं ने उनकी सेहत खराब कर दी है। खासकर वर्दीधारी नौकरशाहों से अब वे खुद भी त्रस्त हो गए हैं। कलेक्टर-एसपी से लेकर आरक्षक से भी सीधी बात हो जाती है। मगर प्रदेश की स्थिति इतनी खराब हो गई है कि उसे देखकर वो खुद भी परेशान हो गए हैं। मुखिया को रोज रिपोर्ट दे रहे हैं, मगर ग्राउंड पर एक्जीक्यूशन कुछेक ही हो रहे हैं। बाकी सब डस्टबिन में। इन हालातों को देखकर इस सादा, सरल, ईमानदार वरिष्ठ आईपीएस की आंखों में कई बार आंसू तक छलक पड़े हैं। इसीलिए त्रस्त इतना हो गए कि सौ बीमारों ने भी एक अनार को बीमार कर दिया।

कोरबा की कप्तानी के लिए हैवी "पॉवर"...: आईपीएस तबादले की सूची कब आएगी? ये सबसे ज्यादा पूछे जाने वाला सवाल है ब्यूरोक्रेसी में। इन दिनों एक सवाल और है। वो ये कि कोरबा के कप्तान कौन बन रहा है? चर्चा है कि दो प्रमोटी आईपीएस में से किसी एक को इसकी कप्तानी दी जाएगी। क्योंकि, दोनों ही कोरबा मांग रहे हैं। कोरबा के पीछे वजह बहुत है। कोरबा को प्राइम (मलाईदार) जगह मानते हैं। वो दिखता भी है। सभी पॉवर यहीं हैं। अब यहां के लिए दोनों प्रमोटी आईपीएस ने अपने-अपने स्तर से फिल्डिंग सेट कर दी है। प्रशासनिक गलियारे से खबर है कि एक प्रमोटी आईपीएस ने तो एक बड़े धार्मिक संगठन से एप्रोच भी करवा दिया है। कप्तान के लिए बात मुखिया तक पहुंच गई। वहां से भी ओके रिपोर्ट आ गई है। अब बस देखना ये होगा कि कौन से वाले प्रमोटी आईपीएस कोरबा जा रहे हैं। दोनों ही जबरदस्त कवायद कर रहे हैं। दोनों का काम भी शानदार है। वैसे कोरबा में एक चुनौती भी है। एक ऐसी राजनीतिक शख्शियत, जिन्हें संतुष्ट करना हर किसी की बात नहीं है।

सीनियर क्वढर की मुख्यधारा में कमबैक...: पशुप्रेमी, मीडिया फ्रेंडली, दिलदार वरिष्ठ आईपीएस का वनवास खत्म होने वाला है। बहुत जल्द मुख्यधारा में लौटने वाले हैं। पूर्व सरकार के वक्त अच्छे पदों में रहें। लेकिन सरकार बदलते ही उन्हें हेडक्वार्टर भेज दिया गया। लेकिन अब उनकी जरूरत महसूस हो रही है। छत्तीसगढ़ पुलिस हो या मीडिया, दोनों जगह पॉपुलर है। लेकिन दो वर्षों से साहब खुद को एकांत में रख लिए हो, ऐसा लग रहा है। अब हैवी पोजिशन में नजर आने वाले हैं। सरकार ने मूड बना लिया है कि काम के आदमी को ज्यादा दिन तक पीएचक्यू में नहीं रख सकते। डिपार्टमेंट में उन्हें आलू के नाम से पहचानते हैं। क्योंकि, वो मटन के साथ भी पक जाते हैं और सब्जी के साथ भी। यानी कि हर जगह एकदम परफेक्ट। बस उनके टैलेंट को समझने की जरूरत होती है। जो हर कोई नहीं समझ पाता। बस समस्या एक ही चीज की है, वो ये कि पहले एक वरिष्ठ अधिकारी को चीफ से हटना होगा, तब उनके लिए जगह बनेगी।

सरकारी भर्ती वालों कमर कस लो...: सरकार को ढाई साल पूरे हो गए। अब आधा ही कायर्काल बचा है। वो भी पता नहीं चलेगा। युवाओं को सरकारी भर्ती को लेकर बड़ी उम्मीदें हैं। जिस संख्याबल के हिसाब से भर्ती होनी थी, वैसे नहीं हुई। क्योंकि, चुनाव के वक्त सरकार में बैठे लोगों ने बड़े-बड़े वादे और सपने दिखाए थे। अब उसे ग्राउंड पर उतारने का वक्त आ गया है। चर्चा है कि इन बचे हुए ढाई वर्षों में सरकारी भर्ती पर फोकस्ड वर्किंग की जाएगी। व्यापमं को भंग कर छग कमर्चारी चयन मंडल भी बना लिया गया है। अब पोस्ट की संख्या 200 की जगह 2000 दिखेगी। वैसे ही पीएससी में। डिप्टी कलेक्टर से लेकर डीएसपी के पोस्ट भी बढ़े हुए दिखने वाले हैं। यानी कि आने वाले ढाई वर्षों को आप जॉब ईयर्स कह सकते हैं। इसलिए कमर अब सबको कसने की जरूरत है। सरकार के साथ-साथ युवाओं को भी। युवाओं को बस यही डर है कि कहीं ये 2028 तक न टरका दें।

खैरागढ़ का बरेठपारा वार्ड बना नशे और अपराध का अड्डा

शक्ति चौक और संतोषी चौक पर खुलेआम बिक रहा नशा, वार्डवासियों की चुप्पी पर उठे सवाल, बाहरी युवकों की आवाजाही से बढ़ी दहशत

नई दृष्टिबिंदु / खैरागढ़

शहर के बीस वार्डों में से बरेठपारा वार्ड इन दिनों अपराध और नशे को लेकर चर्चा में है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यहां सुबह से लेकर देर रात तक नशे का कारोबार खुलेआम चल रहा है। चौक चौराहों पर शराब और गांजे का सेवन आम हो गया है।

दो चौकों पर दो गुटों का दबदबा

बरेठपारा में दो मुख्य चौक हैं। पहला शक्ति चौक और दूसरा संतोषी चौक। स्थानीय सूत्रों के अनुसार शक्ति चौक पर रजक समुदाय के एक युवक का और संतोषी चौक पर यादव समुदाय के एक युवक का प्रभाव बताया जा रहा है। दिन के उजाले से लेकर रात के अंधेरे तक इन इलाकों में नशे से जुड़ी गतिविधियां चलती रहती हैं।

नाबालिग भी नशे की गिरफ्त में

स्थानीय लोगों ने बताया कि वार्ड के कई नौजवान नशे

की लत में पड़ चुके हैं। इसका असर नाबालिगों पर भी दिख रहा है। कुछ नाबालिग शराब की ढुलाई और सप्लाई जैसे कामों में लिप्त बताए जा रहे हैं। जेबकतरी की घटनाओं में भी नाबालिगों के नाम सामने आ रहे हैं।

जुआ-सट्टा भी बेरोकटोक

रात के समय वार्ड में ताश के पत्तों पर जुआ खेला जाता है। इसके अलावा ह्यएक का अस्सीह्ल नाम से सट्टे का खेल भी दिनदहाड़े चलने की बात कही जा रही है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि राजनांदगांव, दुर्ग और भिलाई से भी कुछ युवक देर रात तक वार्ड में आते जाते हैं। इन्हें स्थानीय युवाओं का संरक्षण मिलने की बात सामने आई है।

वार्डवासियों में दहशत

वार्ड के चार-पांच युवकों की गतिविधियों के कारण पूरे बरेठपारा की छवि खराब होने की बात लोग कह रहे हैं। लोगों का कहना है कि कुछ युवाओं का थाना और जेल आना-जाना लगा रहता है। डर के कारण लोग आधी रात को दरवाजा खोलने से भी कतराते हैं।

सवालों के घेरे में चुप्पी

स्थानीय लोगों के बीच यह चर्चा है कि वार्ड में हो रही गतिविधियों की जानकारी सबको है। इसके बावजूद लोग खुलकर बोलने से बच रहे हैं। वार्डवासियों की इस चुप्पी को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। लोगों ने पुलिस प्रशासन से बरेठपारा में बढ़ते नशे और अपराध पर अंकुश लगाने की मांग की है।

किसकोड़ो में बदला माहौल : जहां लगती थी नक्सलियों की चौपाल, वहां डिप्टी सीएम शर्मा ने लगाई जनचौपाल

ग्रामीणों के साथ जमीन पर बैठकर सुनीं समस्याएं, बोले : आदर्श गांव बनेगा किसकोड़ो

नई दृष्टिबिंदु / कांकेर

कभी नक्सल संगठन का गढ़ और बस्तर में नक्सलियों की मांद कहलाने वाले कांकेर जिले के अंतागढ़ विकासखंड के ग्राम किसकोड़ो में शुक्रवार शाम ऐतिहासिक नजारा दिखा। जिस जगह कभी नक्सलियों की चौपाल लगती थी, वहीं उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने ग्रामीणों के बीच जनचौपाल लगाई और जमीन पर बैठकर उनकी समस्याएं सुनीं।

भय के साए से निकलकर विकास की ओर
अक्टूबर 2025 तक किसकोड़ो एरिया कमेटी नक्सली गतिविधियों का प्रमुख केंद्र थी। अब गांव नक्सलवाद से मुक्त घोषित हो चुका है। उप मुख्यमंत्री के पहुंचने पर ग्रामीणों ने आत्मीय स्वागत किया। जनचौपाल में किसकोड़ो सहित आसपास की आठ पंचायतों के सरपंच और बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

एम्बुलेंस, बिजली, पुलिया की मांग

ग्रामीणों ने बेहतर स्वास्थ्य सुविधा, विद्युत व्यवस्था, बंडापाल में सब-स्टेशन, खाद भंडारण केंद्र, स्कूल की बाउंड्रीवाल और मातला मार्ग पर पाइप पुलिया की मांग रखी। डिप्टी सीएम शर्मा ने अधिकारियों को तत्काल कारर्वाई के निर्देश दिए। अस्पताल तक मरीजों के लिए एम्बुलेंस और बिजली व्यवस्था दुरुस्त करने को कहा।

आदर्श ग्राम बनेगा किसकोड़ो

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि किसकोड़ो को आदर्श ग्राम के रूप में विकसित किया जाएगा। विकास कार्यों में कोई कमी नहीं आने दी जाएगी। उन्होंने कहा, "वर्षों तक डर के साए में रहने के बाद विकास की जो ललक ग्रामीणों में दिख रही है, वह अविश्वसनीय है।

सपने के सच होने जैसा

ग्रामीणों ने भावुक होकर कहा, "पहले यहां नक्सलियों की चौपाल लगती थी, आज पहली बार शासन के उप मुख्यमंत्री की चौपाल लगी है। यह किसी सपने के सच होने जैसा है।" पहले शाम ढलते ही लोग घरों से निकलने से डरते थे। आज गांव विकास और लोकतंत्र पर भरोसे के साथ आगे बढ़ रहा है।

जैविक खेती और वनोपज पर जोर

श्री शर्मा ने ग्रामीणों को जैविक कृषि के लिए प्रेरित किया और प्रशिक्षण व सर्टिफिकेशन पर जोर दिया। आसपास की पंचायतों को मिलाकर ब्रांडिंग करने और लघु वनोपज प्रसंस्करण की व्यवस्था बनाने के निर्देश दिए। प्रवास के दौरान उन्होंने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण भी किया।

हाल ही में गांव में पेयजल संकट दूर करने के लिए बोर खनन कराया गया है। जनचौपाल में कलेक्टर निलेशकुमार महादेव क्षीरसागर, एएसपी आकाश श्रीश्रीमाल समेत अन्य अधिकारी मौजूद रहे। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि कभी भय और बंदूक की पहचान रखने वाला किसकोड़ो अब विकास, विश्वास और लोकतंत्र का नया प्रतीक बन रहा है। यहां गूंज रहे "भारत माता की जय" के नारे बदलते बस्तर की नई तस्वीर पेश कर रहे हैं।

महासमुंद में कृषि विभाग की कार्रवाई : ओडिशा प्रिंट वाले उर्वरक की 11 बोरियां जब्त

वैष्णवी एग्रो इंडस्ट्रीज पर छापा, राज्यभर में निरीक्षण अभियान जारी

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

किसानों को गुणवत्तापूर्ण उर्वरक उपलब्ध कराने के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत कृषि विभाग ने महासमुंद में बड़ी कारर्वाई की है। बागबाहरा विकासखंड के ग्राम घोयनाबाहरा स्थित वैष्णवी एग्रो इंडस्ट्रीज से ओडिशा प्रिंट वाली पीआरओएम उर्वरक की 11 बोरियां जब्त की गईं।

550 किलो उर्वरक जब्त

कलेक्टर विनय लंगेह के निर्देश पर कृषि विभाग की टीम ने वैष्णवी एग्रो इंडस्ट्रीज का औचक निरीक्षण किया। जांच में प्रतिष्ठान से सालेपाली, पाइकमाल, जिला बरगढ़ (ओडिशा) प्रिंट वाली उर्वरक की 11 बोरियां मिलीं। कुल करीब 550 किलोग्राम उर्वरक को नियमानुसार जब्त कर लिया गया।

गुणवत्ता पर निगरानी जारी

कृषि विभाग के अधिकारियों ने बताया कि किसानों के हितों की सुरक्षा और उर्वरकों की गुणवत्ता व वैध आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए लगातार निगरानी की जा रही है। उर्वरक के भंडारण और विक्रय में अनियमितता मिलने पर कड़ी कारर्वाई की जाएगी। राज्यभर में उर्वरक विक्रय केंद्रों का सतत निरीक्षण अभियान आगे भी जारी रहेगा।

आर्टकॉम के हर आंगन एक पेड़ अभियान के तहत 300 पौधों का किया वितरण

सांसद विजय बघेल ने हेलमेट पहने और सीटबेल्ट लगे नागरिकों को दिए पौधे

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

छत्तीसगढ़ की कला और प्रकृति के प्रति समर्पित संस्था आर्टकॉम के अभियान ह्यहर आंगन एक पेड़ह्ल के तहत रविवार को सुपेला चौक में 300 फलदार व आयुर्वेदिक पौधों का निशुल्क वितरण किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व दुर्ग सांसद विजय बघेल ने किया। आर्टकॉम संचालक निशु पांडेय ने बताया कि संस्था का संकल्प हर रविवार वृक्षारोपण एवं पौध वितरण कर आमजन तक संदेश पहुंचाना है कि ऑक्सीजन पेड़ पौधों से ही मिलती है। इसलिए हर आंगन में एक पेड़ लगाना जरूरी है। पौध वितरण की शुरुआत सांसद विजय बघेल ने की। उनके आह्वान पर उन्हीं के हाथों से हेलमेट लगाकर आए और सीटबेल्ट का उपयोग करने वाले जिम्मेदार नागरिकों को सम्मान स्वरूप पौधे दिए गए। इसके बाद सर्व समाज के नेतृत्वकर्ताओं ने भी पौधों का

वितरण किया। इस अवसर पर मीडिया सलाहकार अमिताभ भट्टाचार्य ने सुपेला चौक में ट्रैफिक व्यवस्था दुरुस्त करने पर भिलाई पुलिस का आभार जताया। उपस्थित गणमान्य नागरिकों ने कहा कि निशु पांडेय के नेतृत्व में ह्यहर आंगन एक पेड़ह्ल और ह्यहर आंगन एक हार्वेस्टिंग का संदेश आज भिलाई और छत्तीसगढ़ से निकलकर देश के हर हिस्से तक पहुंच रहा है। यह भिलाई के लिए गर्व की बात है। कार्यक्रम में संरक्षक करमजीत सिंह, शंकर लाल देवांगन, सिख समाज के पदाधिकारी, सुदीप अग्रवाल, राजीव अग्रवाल, पुष्पेंद्र कुलश्रेष्ठ, ओम यादव, प्रमोद सिंह, शारदा गुप्ता, ह्यहर आंगन एक पेड़ह्ल के अध्यक्ष गुरुनाम सिंह, अमिताभ भट्टाचार्य, बृजमोहन उपाध्याय, संजय तिवारी, श्रीनिवास खेड़िया, संजय खंडेलवाल, रजनीकांत अग्रवाल, श्रीकांत ताम्रकार, प्रभुनाथ बैठा, संगम अग्रवाल, लीलेश देशमुख, अजय पाणिग्रही, बंटी नाहर, श्रीनिवास मिश्रा, रविन्द्र देवांगन, भास्कर तिवारी सहित कई लोग उपस्थित थे। सिख पंचायत से वाइस चेयरमैन पलविंदर सिंह रंधावा, गुरमीत सिंह गांधी, बलजीन्दर सिंह कलेर, बलदेव सिंह, बलविंदर सिंह, हरपाल सिंह और स्वर्ण सिंह कोक मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय से पद्मश्री डॉ. बुधरी ताती ने की मुलाकात

आदिवासी संस्कृति और महिला सशक्तिकरण में योगदान को सराहा

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय से शुक्रवार शाम मुख्यमंत्री निवास में पद्मश्री डॉ. बुधरी ताती ने सौजन्य मुलाकात की। सीएम साय ने जनजातीय समाज के उत्थान, लोक संस्कृति के संरक्षण और महिला सशक्तिकरण में डॉ. ताती के दीघर्कालीन योगदान की सराहना की।

समाज के लिए प्रेरणादायी हैं डॉ. ताती
मुख्यमंत्री ने कहा कि डॉ. बुधरी ताती ने अपना संपूर्ण जीवन जनजातीय समाज की सेवा, लोक परंपराओं के संरक्षण और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए समर्पित किया है। उनका सेवा भाव और समर्पण पूरे समाज के लिए

प्रेरणादायी है। चार दशक से कर रहीं सेवा सीएम साय ने बताया कि दंतेवाड़ा के एक छोटे गांव से निकलकर डॉ. ताती ने चार दशक से अधिक समय तक बस्तर अंचल समेत वनवासी क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण और जनजातीय संस्कृति के संरक्षण के लिए काम किया है। उन्होंने सैकड़ों महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाकर सम्मानजनक आजीविका से जोड़ा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि डॉ. बुधरी ताती जैसे व्यक्तित्व हमारी समृद्ध जनजातीय विरासत और सेवा परंपरा के सशक्त प्रतीक हैं। उनका जीवन नई पीढ़ी को समाज के प्रति संवेदनशीलता और समर्पण का संदेश देता है। डॉ. बुधरी ताती ने जनजातीय समाज के विकास और सांस्कृतिक संरक्षण के लिए राज्य सरकार के प्रयासों की सराहना की। इस दौरान उनके परिजन भी मौजूद रहे।

शिक्षा, संगठन और एकता से होती है समाज की प्रगति : डॉ. रमन सिंह

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने शुक्रवार को राजनांदगांव शहर के सिंगदई में 35 लाख रुपये की लागत से निर्मित जिला निषाद केंवट सामाजिक छात्रावास भवन का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि किसी भी समाज की वास्तविक प्रगति शिक्षा, संगठन और सामाजिक एकता से होती है।

विकास कार्यों की घोषणाएं

इस मौके पर डॉ. सिंह ने सिंगदई वार्ड में सीसी रोड निर्माण, शिवनाथ नदी तट पर महिला घाट और आंगनबाड़ी भवन निर्माण की घोषणा की। समाज की मांग पर छात्रावास में अतिरिक्त कक्ष निर्माण के लिए 10 लाख रुपये देने की भी घोषणा की।

बेटियों को मिलेगी नई दिशा

विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि यह छात्रावास भवन समाज के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसका उपयोग छात्राओं की शिक्षा के लिए किया जाएगा, जिससे बेटियों की शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि निषाद समाज का इतिहास गौरवशाली रहा है। रामायण काल में निषादराज और भगवान श्रीराम की आत्मीयता सामाजिक समरसता का श्रेष्ठ उदाहरण है। समाज का संगठन जितना मजबूत होगा, युवाओं का भविष्य उतना ही उज्ज्वल होगा।

समाज की एकता सबसे बड़ी शक्ति

सांसद संतोष पाण्डेय ने कहा कि निषाद समाज संस्कृति और परंपराओं को आगे बढ़ाने वाला समाज है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मत्स्य पालन के लिए अलग मंत्रालय बनाकर समाज के हितों को प्राथमिकता दी है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और डॉ. रमन सिंह हमेशा निषाद समाज के विकास में अग्रणी रहे हैं। गुण्डरदेही विधायक कुंवर सिंह निषाद ने कहा कि समाज का लक्ष्य युवाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं के जरिए प्रशासनिक सेवाओं में आगे बढ़ाना है। इसी उद्देश्य से छात्रावासों की स्थापना की जा रही है, ताकि आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को बेहतर सुविधा मिले। कार्यक्रम में अध्यक्ष अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग नेहरू निषाद, जिला अध्यक्ष निषाद समाज द्रुपत कुमार निषाद, महापौर मधुसूदन यादव, अध्यक्ष राजगामी संपदा न्यास पूणिर्मा

साहू सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि और समाज के पदाधिकारी मौजूद रहे।

डिप्टी सीएम साव से मिले दया सिंह, जांच का आदेश

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

नगर पालिक निगम भिलाई में पिछले कुछ वर्षों के निर्माण कार्यों और भुगतान में गंभीर वित्तीय व प्रशासनिक अनियमितताओं के आरोप लगे हैं। भाजपा के उपनेता प्रतिपक्ष दया सिंह ने नगरीय प्रशासन मंत्री अरुण साव को पत्र लिखकर पूरे मामले की आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो (एडह) से जांच कराने की मांग की है। मांग को गंभीरता से लेते हुए मंत्री जी ने तत्काल संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है। पत्र में तत्कालीन आयुक्त समेत संबंधित अधिकारियों पर नियमों की अनदेखी कर ठेकेदारों को अनुचित लाभ पहुंचाने और सरकारी धन के दुरुपयोग का आरोप लगाया गया है। दया सिंह ने कहा कि निगम में कई विकास कार्यों में वैधानिक प्रक्रियाओं का पालन नहीं किया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ अधिकारियों की मिलीभगत से प्रशासनिक और वित्तीय अनियमितताएं हुई हैं, जिनकी निष्पक्ष जांच जरूरी है।

कांग्रेस के संगठन सृजन अभियान : जिला अध्यक्षों के प्रशिक्षण शिविर में केसी वेणुगोपाल से भेंट

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

संगठनात्मक व राजनीतिक विषयों पर हुई संक्षिप्त चर्चा

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के संगठन सृजन अभियान के तहत छत्तीसगढ़ के जिला अध्यक्षों का 10 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर जारी है। शिविर में वरिष्ठ नेताओं का मार्गदर्शन मिल रहा है। इसी क्रम में कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव केसी वेणुगोपाल से जिला अध्यक्षों की भेंट हुई। इस दौरान संगठनात्मक और राजनीतिक विषयों को लेकर संक्षिप्त चर्चा भी हुई। प्रशिक्षण शिविर का उद्देश्य जिला स्तर पर संगठन को मजबूत करना और आगामी रणनीति पर काम करना है। शिविर में वरिष्ठ नेता जिला अध्यक्षों को संगठन संचालन, बूथ प्रबंधन और जनसंपर्क के गुर सिखा रहे हैं।

क्र.	पाठ्यक्रम का नाम	क्र.	पाठ्यक्रम का नाम
1.	फायर टेक्नोलॉजी एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	5.	पी. जी. कोर्स व्यावसायिक सेफ्टी, स्वास्थ्य व पर्यावरण मैनेजमेंट सिस्टम
2.	इंडस्ट्रियल सेफ्टी / पी. जी. इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6.	हैल्थ सेनेटरी इंस्पेक्टर
3.	बी.एस.सी. इन फायर सेफ्टी	7.	सब- फायर ऑफिसर
4.	पी. जी. कोर्स फायर एवं इंडस्ट्रियल सेफ्टी	8.	सर्टिफिकेट इन फायरमैन-इंडस्ट्रियल सेफ्टी

(An Authorized Training Centre of AEERO)
फायर सेफ्टी एवं डिजास्टर मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट
(मान्यता प्राप्त निजी प्रशिक्षण संस्थान)
कैंपस :- इंदिरा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल, सुपेला, भिलाई, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़
ADMISSION HELPLINE: 7697212782

"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100